चन्दामामा
मई १९९५
Rs 5

पारले

पारले पॉपिन्स के रैपर भेजिए, धमाकेदार उपहार पाइए.

**मुफ्त** पारले पॉपिन्स के 20, रैपर भेजने पर शरारत भरा पज़ल किट. पारले पॉपिन्स के 10 रैपर भेजने पर फन पेड और जंगल बुक स्टिकर. पारले पॉपिन्स के 4 रैपर भेजने पर जंगल बुक स्टिकर.

* *पॉपिन्स इस भेंट के बिना भी मिलता है.*

फ्रूट जूस या पल्प रहित,
अतिरिक्त फ्लेवर सहित

जल्दी करो
उपहार बहुत कम हैं.

डाक टिकट लगे लिफाफे पर अपना नाम और पता लिखें और पारले पॉपिन्स के खाली रैपर के साथ इस पते पर भेजें. पॉपिन्स पॉइन्ट, पी. ओ. बॉक्स 907, बम्बई-400057

/94/PP/186-hi

चन्दामामा
CHANDAMAMA

ख़तरनाक राक्षस का
अड्डा... भागो 26 पर !
घर
घर पर आए... फ्रैश-एन-
जूसी फ्रूटी की मस्ती लुटाएं!
घने जंगल में हो गए गुम...
लौटें वापस 21 पर
पेड़ रसीले आमों का...
एक दाँव मिला बोनस का
शुरू करें
Frooti
सनसनीखेज सफ़र
मैंगो फ्रूटी की एक चुस्की...
पहुंच जाइए 14 पर
1 2 3 4 5 6 7 8
29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42
70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80

66
67
65
58
68
64
59
56
55
63
60
57
रसीली फ्रूटी का
खज़ाना मिले...
एक दाँव और चलें !
54
का जोश
कूद जाएं !
61
53
62
चमगादड़ों की
गुफ़ा में कैद...
एक दाँव जाएं बैठ !
52
44
45
43
46
47
48
49
50
51
पिशाच ने
रास्ता भुलाया...
36 पर लौटाया
मज़ेदार फ्रूटी पीकर...
आ जाएं 59 पर
रेत के दलदल में गए धंस...
27 पर आएं वापस
27
26
25
24
23
22
21
20
8
भयानक चुड़ैल
के चंगुल से बचें...
9 पर लौटें
लंबी छलांग लगाएं...
35 पर पहुंच जाएं
हाथ आया
ताज़ा आम...
7 खाने आगे बढ़ें
19
18
9
10
12
13
14
15
16
17
11
मगरमच्छों का दलदल...
एक दाँव गया

# चन्दामामा

मई १९९५

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

## बच्चों का स्वास्थ्य

यू एन ऐ सी इ एफ़ की तरफ़ से हाल ही में एक सर्वेक्षण हुआ, जिससे प्राप्त विवरण अति गंभीर तथा भयप्रद हैं। इनसे मालूम हुआ कि भारत के ४८ प्रतिशत बच्चों को पौष्टिक आहार उपलब्ध नहीं होता। उनमें से लगभग उन्नीस प्रतिशत बच्चों के मर जाने की संभावना है। २,२००,००० बच्चे अपटुग्रिन्यों से पीड़ित हैं। ६,६००,००० बच्चे शक्तिहीन हैं। जिस कारण वे ठीक तरह से घूम-फिर नहीं पाते, क्योंकि इनके शरीर में लोहे की कमी है। अपने आहार में विटामिन ए की कमी के कारण ६०,००० अंधे हो रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि २५०,०००,००० बच्चे पौष्टिक आहार के अभाव में तरह-तरह के रोगों से पीड़ित हैं। ३० प्रतिशत आबादी ग़रीबी की दशा में है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इन ग़रीब लोगों में अपनी संतान को पौष्टिक आहार देने की आर्थिक शक्ति नहीं है। इन्हें आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने की जिम्मेदारी अवश्य ही सरकार पर है। भारत के अधिकतम प्रांतों में मध्याह्न भोजन की प्रणाली लागू है। और इस प्रणाली का लाभ वे ही बच्चे उठा पाते हैं, जो स्कूल में भर्ती हुए हों।

जो बच्चे अपनी शिक्षा को ज़ारी नहीं रख पाये या जिनकी उम्र अभी स्कूल जाने की नहीं है, उनको खिलाने का प्रबंध कुछ ग़ैर सरकारी स्वैच्छिक तथा परोपकारी संस्थाएँ कर रही हैं। किन्तु वे भी विस्तृत रूप से इस प्रणाली को अपनी आर्थिक क्षमता के अभाव में अधिकाधिक समय तक ज़ारी नहीं रख पा रहे हैं। इस स्थिति में उन बच्चों का क्या होगा, जो किसी से भी किसी भी प्रकार की सहायता पाने से वंचित हैं। क्या उन्हें मर जाना पड़ेगा?

इस समस्या का एक समाधान है। स्कूल जाने की उम्र में हर बच्चे को स्कूल भेजना चाहिये, जिससे उसे दूध या कोई भोजन-पदार्थ मिले। किन्तु यही पर्याप्त नहीं। बच्चों के माता-पिता को आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए, जिससे वे अपनी कम उम्र की संतान के लिए पौष्टिक आहार सस्ते दामों में खरीद पायें। अलावा इसके, बचपन में उनके स्वास्थ्य का भी ख्याल रखा जाए, जिससे वे रोगों से बच सकें। रोग की चिकित्सा से रोक की रुकावट अवश्य ही बेहतर है।

वर्ष : ४८ मई १९९५ अंक : ९

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-
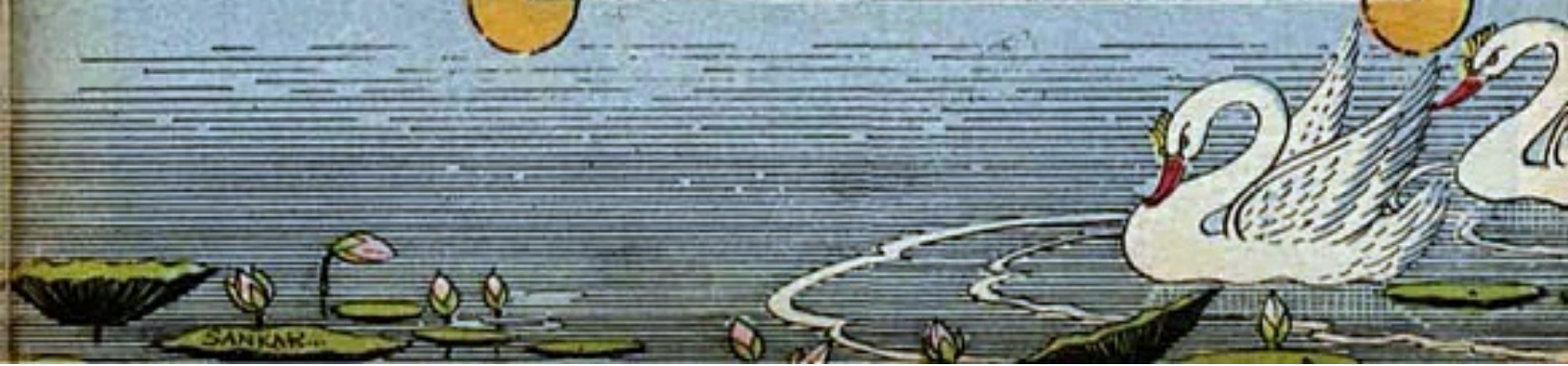
**PolioPlus**

# IMMUNIZATION AN ASSURANCE OF GOOD HEALTH TO CHILDREN

## VACCINATIONS When and How Many

| Age to Start Vaccination | Name of Vaccine | Name of Disease | How Many Times |
|---|---|---|---|
| Birth | BCG | Tuberculosis | Once |
| 6 weeks | Polio | Polio | Three times with intervals of at least one month |
| 6 weeks | DPT | Diphtheria Pertussis (Whooping Cough) Tetanus | Three times with intervals of at least one month |
| 9 months | Measles | Measles | Once |

**Babies should receive all vaccinations by the time they are twelve months old.**

Pregnant women should get themselves vaccinated against Tetanus (TT) twice—in an interval of at least one month—during the later stages of pregnancy.

**HEALTHY CHILD—NATION'S HOPE & PRIDE**

Design courtesy : World Health Organisation

# सांघिक अभिवृद्धि

डानिश राजधानी कोपेनहागन में मार्च ६ से १२ तक 'सांघिक अभिवृद्धि' संबंधी विश्व-महासभाएँ संपन्न हुई। इसके व्यवस्थापकों ने १८५ देशों को इन सभाओं में भाग लेने के लिए आह्वान दिया। १२१ देशों के प्रतिनिधियों ने सप्ताह भर चलायी गयी इन सभाओं में एक दिन ही सही, भाग लिया। यह सचमुच ही अभूतपूर्व विषय कहा जा सकता है। १८० देशों से ६,००० से अधिक प्रतिनिधि इसमें उपस्थित हुए। एक हजार से अधिक ग़ैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। यह देखते हुए इसकी प्रमुखता का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

इन सभाओं में चर्चित प्रधान विषय हैं - सांघिक अभिवृद्धि, याने वहाँ की जनता का क्षेम तथा प्रगति। संसार की जनसंख्या में अधिक संख्यक दरिद्रता से पीडित हैं। साक्षरता भी बहुत कम है। कुछ देशों में बेकारी की समस्या गंभीर है। कुछ लोग सरकार की सहायता की प्रतीक्षा में हैं तो कुछ किसी भी प्रकार की सहायता के अभाव में नाना प्रकार के कष्ट झेल रहे हैं। उपस्थित नेताओं ने माना कि संसार की शांति और दरिद्रता का निकट संबंध है। भारत के प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव ने इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा "दरिद्रता, पीड़ा चाहे किसी भी देश के कोने में हों, वे शांति की रक्षा को भंग करती हैं। सांघिक अभिवृद्धि हो, मानव का सर्वतोमुखी विकास हो, इसके लिए दरिद्रता का निर्मूलन करने की शक्ति प्रजा में होनी चाहिये।" इसकी आवश्यकता पर उन्होंने ज़ोर दिया और सावधान भी किया।

विश्व-शांति में विघ्न डालनेवाली ऐसी भयंकर समस्याओं के बारे में संसार के नेता इसके पहले भी बता चुके हैं, भाषण दे चुके। यह कोई पहली बार नहीं है। परंतु इसके पहले जितने भी सम्मेलन संपन्न हुए हैं, उन सम्मेलनों में केवल इसी बात पर ध्यान दिया गया है कि इस दिशा में सरकारें क्या कार्रवाई करें या कर सकती हैं। किन्तु कोपेनहागन में ये सभाएँ जो संपन्न हुईं, उनमें सरकार के सक्रिय रूप से भाग लेने की बात पर चर्चाएँ नहीं हुईं। इस सभा में नेताओं ने घोषणा की कि दरिद्रता, निरक्षरता, बेरोज़गारी आदि समस्याओं का परिष्कार जनता ही कर सकती है। उन्हें ही सक्रिय रूप से भाग लेकर समस्या का हल ढूँढ़ना होगा। उन्हीं का स्थान सर्वोत्तम है।

ग़ैर सरकारी संस्थाओं ने इस दिशा में जो अभिरुचि दिखायी, उसे देखते हुए विश्व के नेताओं को प्रोत्साहन मिला। उनमें विश्वास उत्पन्न हुआ। इसीलिए उन्होंने कहा कि प्राथमिक स्तर से इन समस्याओं के समाधानों को ढूँढ़ना है।

मानवजाति के विनाशक हैं विस्फोटक आयुध। बीसवीं सदी में इनकी समाप्ति पर बहुत कुछ किया गया है। शताब्दी के अंत में मानव अपने महत्वपूर्ण प्रयासों को रचनात्मक दिशा में मोड़ने के प्रयत्न में है। और इसके शुभ लक्षण दिख रहे हैं। हमारे प्रधान मंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने कहा "यह संसार एक-दूसरे पर आधारित है। दरिद्रता, निरक्षरता आदि रोगों के निर्मूलन की दिशा में अंतर्देशीय सहयोग ही एकमात्र साधन है।"

# भगवान उतर आया

धर्मपुरी का निवासी मोहन बड़ा कंजूस था। पिता बीमार था, पर उसने उसकी चिकित्सा नहीं करवायी। फलतः उसकी मृत्यु हो गयी। पति की मृत्यु पर माँ बहुत ही दुखी थी। मोहन ने तो इसकी परवाह ही नहीं की। फलस्वरूप थोड़े दिनों के बाद वह भी गुज़र गयी। उसकी पत्नी और बच्चे बस, जीने के लिए जी रहे हैं। उनकी किसी भी इच्छा की पूर्ति नहीं होती। जीवित शव की तरह वे जी रहे हैं। सूद पर रक़म देकर मोहन ने लाखों रुपये कमाये।

सुधाम, मोहन के ही घर के सामने के घर में रहता था। वह दैवभक्त था। था परोपकारी। उसने कई बार मोहन को समझाया, किन्तु प्रयोजन शून्य।

मोहन की पत्नी थी रुक्मिणी। पतिव्रता स्त्री थी। पति की बात भूलकर भी टालती नहीं थी। उनके दो बच्चे थे। वे माँ-बाप के कहे अनुसार ही करते और रहते थे। सुधाम ने रुक्मिणी और उसके बच्चों को मोहन के विरुद्ध विद्रोह करने, बहुत बार प्रोत्साहन दिया। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

जो जो, मोहन के पास कर्ज़ लेने आते थे, उन्हें सुधाम सावधान करता रहा। उनसे कहता रहा "मोहन तुम लोगों से अधिक व्याज ले रहा है। तुम लोगों की असहायता का फ़ायदा उठा रहा है। उससे कर्ज़ लेने की आदत छोड़ दो" पर बेचारे वे मासूम थे। उनका कहना था कि इसमें मोहन की कोई ग़लती नहीं। अपने दुर्भाग्य को ही वे कोसते थे।

यह सब देखते हुए सुधाम से नहीं रहा गया। मोहन के अन्यायों पर प्रतिबंध लगाने उसे कोई उपाय नहीं सूझा। उसने उसे मार डालने का निश्चय किया।

सुधाम ने अपने आप तर्क-वितर्क किया "मोहन से मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। उसे मारने से मुझे कोई लाभ नहीं होगा। लाभ होगा

अवधनंदन

तो परायों को। इसलिए उसे मारने से परोपकार ही होगा। भगवान ने कितने ही अवतार लिये। सब अवतारों में उसने पापियों को दंड दिया। दुष्ट को दंड दिया और शिष्ट की रक्षा की। इससे यह स्पष्ट होता है कि पापी को उसके पाप की सज़ा देना अधर्म नहीं है। उसे मारकर मैं पाप नहीं कर रहा हूँ, बल्कि पुण्य ही कर रहा हूँ।''

सुधाम की एक आदत थी। किसी काम को करने के पहले वह राम के मंदिर में जाता और भगवान की मूर्ति को प्रणाम करके उससे आशीर्वाद माँगता। इसके बाद ही वह काम पर लग जाता था। ऐसा करने से उसमें आत्म-विश्वास की वृद्धि होती थी।

इस बार भी सुधाम राम के मंदिर में गया। उस समय मंदिर में पुजारी नहीं था। उसने प्रार्थना समाप्त की और आँखें खोलीं तो देखा कि उसके सामने मनोमुग्धकारी रूप में सोलह साल का एक युवक खड़ा है। उसने सुधाम से कहा ''मैं भगवान हूँ। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे घर आऊँगा।''

आश्चर्य में डूबे सुधाम ने कहा ''तुम और भगवान। कैसे विश्वास करूँ ?''

''तुमने ऐसा काम करने की ठानी, जो तुमसे हो नहीं पायेगा। इसीलिए मैं दिव्यलोक से भूलोक उतर आया हूँ। तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ। मोहन को मारना तुम्हारे बस की बात नहीं है। पापियों में पाप-बल होता है। उन्हें युक्ति से झुकाना है, ना कि शक्ति से।'' भगवान ने कहा।

मोहन को मारने का विचार उसके अलावा किसी और को मालूम ही नहीं था। मालूम होने की गुँजाइश भी नहीं थी। इसलिए सुधाम को विश्वास हो गया कि यह युवक अवश्य ही भगवान है। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा।

भगवान ने उसे उठाया और कहा ''मोहन के अलावा किसी और को यह ना बताना कि मैं भगवान हूँ। फिर तुम्हीं देखते जाओ कि क्या होता है''।

दोनों सुधाम के घर गये। उस दिन घर में अच्छे पकवान बने और दोनों ने खूब खाया। कुछ रुचिकर पकवानों को लेकर सुधाम मोहन के घर गया। उसने उन्हें खाने के बाद पूछा ''बहुत ही स्वादिष्ट हैं। आज ऐसी क्या ख़ास

बात है ? कहीं आज तुम्हारा जन्म-दिन तो नहीं ?''

''साक्षात् भगवान ही मेरे घर पधारे हैं। उनकी आज्ञा है कि तुम्हारे सिवा किसी और को यह रहस्य ना बताऊँ। तुम भी किसी से इसका ज़िक्र मत करना ''। सुधाम ने धीरे से कहा। मोहन ने कहा ''देखना चाहता हूँ कि भगवान कैसे होते हैं। उन्हें एक बार मेरे घर ले आना।'' सुधाम घर गया और अपने साथ भगवान को ले आया। मोहन ने भगवान को नख से शिख पर्यंत देखा और पूछा ''तुम भगवान हो ? रहने के लिए सुधाम के घर के अलावा और कोई घर नहीं मिला ?'' उसकी बातों से सुधाम के प्रति उसका द्वेष स्पष्ट व्यक्त हो रहा था।

''सुधाम मेरा भक्त है। इसीलिए उसी के घर में रह रहा हूँ ''। भगवान ने कहा।

मोहन ने मज़ाक किया ''कैसे विश्वास करूँ कि तुम भगवान हो ?'' ''यह सत्य शीघ्र ही तुम्हें मालूम होगा। ऋण-पत्र लिये बिना ही हर दिन हज़ार अशर्फ़ियों के हिसाब से दस हज़ार अशर्फ़ियाँ दस दिन सुधाम को देते जाओ। इससे तुम्हारी रक़म सौ गुना अधिक होगी। पूरी रक़म सुधाम तुम्हें ही देगा। बस, इस रक़म में से दस हज़ार अशर्फ़ियाँ मात्र उसके लिए छोड़ दो।'' भगवान ने कहा।

''तुम दोनों मिल-जुलकर यह नाटक कर रहे हो। ऋण-पत्र के बिना अगर मैं सुधाम को रक़म दूँ और उसके बाद वह अगर कहे कि मैंने कोई उधार ही नहीं लिया तो मैं क्या कर सकता हूँ। मेरा विश्वास भी कोई नहीं करेगा। मेरी पूरी रक़म यह हड़प लेगा और मज़े से रहेगा। नुक़सान तो मेरा ही होगा ना ?'' मोहन ने कहा।

''साक्षात् जब भगवान ही साक्षी हैं, तब ऋण-पत्र की क्या आवश्यकता?'' भगवान ने हँसते हुए कहा।

मोहन ने गंभीर स्वर में कहा ''मुझे विश्वास नहीं कि तुम भगवान हो''।

तब वहाँ उसी गाँव का भूषण नाम का आदमी आया। दस एकड़ की उसकी ज़मीन थी। अपना बहुत ही बड़ा घर भी था। वह परोपकारी था, धर्मात्मा था, दानी था, इसलिए धन उसके पास होता नहीं था। अपने इन गुणों और आदतों के

कारण उसे सदा धन की ज़रूरत पड़ती थी।

उसके नौकर दामू की बेटी की शादी मुक़र्रर हुई। उसे सौ अशर्फ़ियों की जरूरत आ पड़ी। भूषण ने स्वयं दामू के लिए कर्ज़ लेना चाहा। मोहन को अपनी जरूरत के बारे में वह पहले ही बता चुका था। इसलिए ऋण-पत्र उसने तैयार करके रखा था।

भगवान ने भूषण से कहा "देखने में परोपकारी और दानी लग रहे हो। तुम बिना किसी गवाही व ऋण-पत्र के, हर दिन हजार अशर्फ़ियों के हिसाब से दस दिन दस हज़ार अशर्फ़ियाँ सुधाम को दो। दस दिनों के बाद वह धन सौ गुना अधिक होगा। सब कुछ तेरा ही है। बस, दस हज़ार अशर्फ़ियाँ मात्र सुधाम को देना"।

"तुम जैसा कहते हो, वैसा ही करूँगा। पर, हर दिन हज़ार अशर्फ़ियाँ कहाँ से लाऊँ?" भूषण ने दीनता-भरे स्वर में कहा।

"मोहन तुम्हें कर्ज देगा"। भगवान ने कहा।

मोहन ने तुरंत भूषण से कहा "बिना लिखा-पढ़ी के कर्ज देने का प्रश्न ही नहीं उठता। अपना घर और खेत जमानत के रूप में रखो और ले जाओ अशर्फ़ियाँ। एक ही किश्त में।"

"कर्ज़ एक ही किश्त में ले सकते हो, किन्तु पूरा धन एक ही किश्त में लौटाना नहीं चाहिये। ऐसा करने पर भाग्य तुम्हारा साथ नहीं देगा"। भगवान ने भूषण को सावधान किया।

मोहन की माँग के अनुसार भूषण ने ऋण-पत्र लिखकर उससे अशर्फ़ियाँ लीं और उसमें से
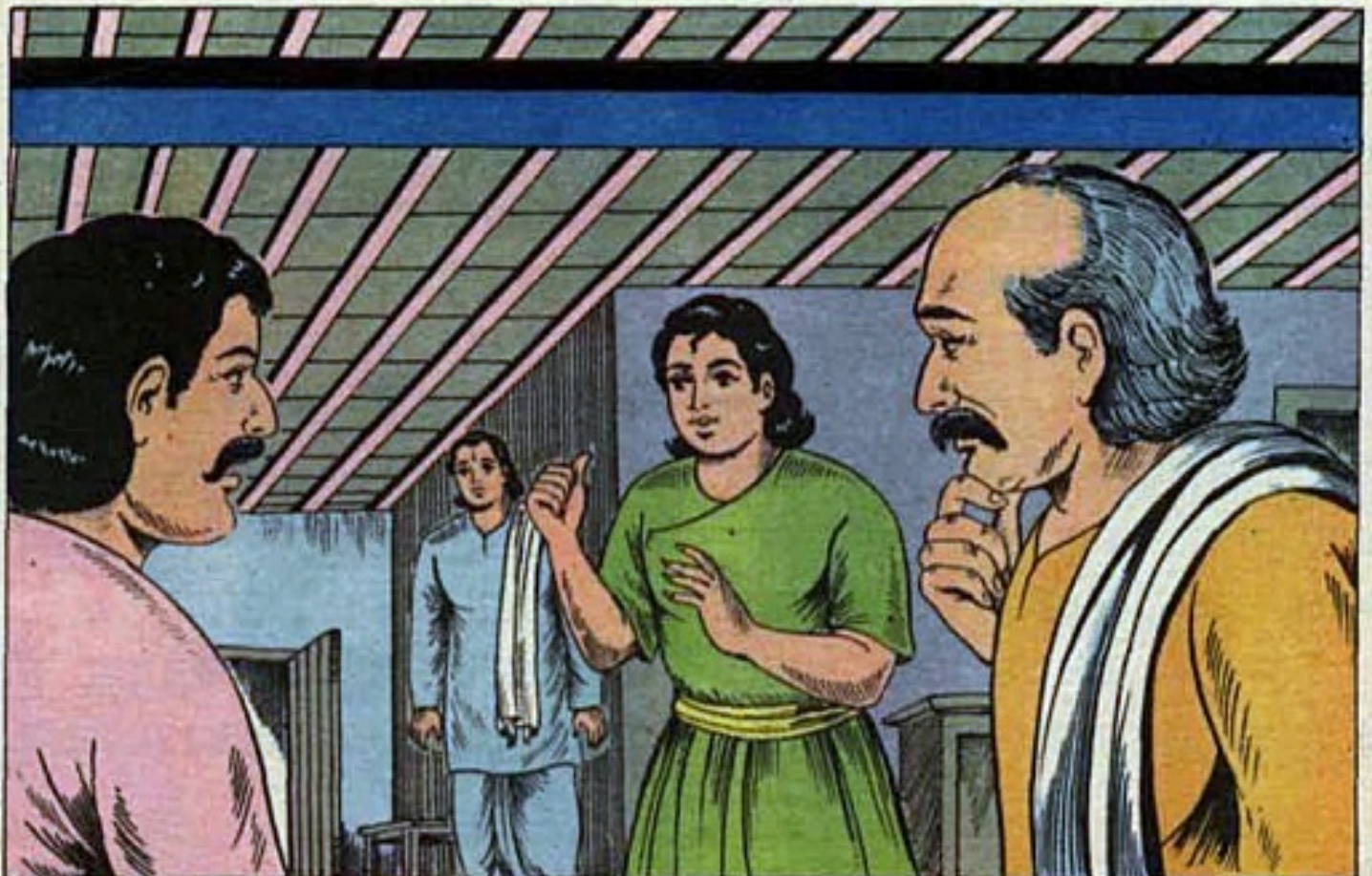
एक हज़ार अशर्फ़ियाँ सुधाम को दीं। भगवान ने उससे कहा "यह बात गाँव में तुमसे परिचित सब लोगों को बताना। यह कोई आवश्यक नहीं कि कम से कम हज़ार अशर्फ़ियाँ चाहिये। एक अशर्फ़ी भी काफ़ी है। वही लाख अशर्फ़ियाँ हो सकती हैं। बस, बात इतनी ही है कि तुम जो दोगे. उससे सौ गुने का लाभ तुम्हें अधिक होगा।"

'हाँ' कहकर भूषण वहाँ से चला गया।

"तुम सब लोगों ने मुझे भिखारी बनाने के लिए कोई योजना बनायी है, षड़यंत्र रचा है। अगर तुम सचमुच ही भगवान हो तो कोई चमत्कार करके दिखाओ।" मोहन ने कहा।

"तो देखो। अपने दसों अवतार दिखाता हूँ"। भगवान ने कहा। मोहन भगवान को देखता रहा। उसे उसमें कोई परिवर्तन या चमत्कार दिखायी नही पड़ा। सुधाम मात्र भगवान के दसों अवतारों को देखने में तन्मय था। वह आनंद से डोल रहा था। उसे लगा कि भगवान ने उसे यह सुवर्ण अवसर देकर उसके जीवन को धन्य कर दिया। उसने उसकी प्रशंसा में श्लोकों का पठन किया।

"यह सब धोखा है। तुम लोग मुझे बेवकूफ़ बना रहे हो। चले जाओ यहाँ से" नाराज़ी से मोहन चिल्ला पड़ा। भगवान और सुधाम वहाँ से चले गये।

उस दिन संध्या को मोहन के घर के सामने भीड़ जमा हो गयी। सब लोग अपनी जायदाद को गिरवी पर रखकर उससे धन ले रहे थे और वह धन सुधाम को दे रहे थे। सुधाम के घर में धन की राशि जमा हो गयी।

यह सब देखकर सुधाम डर गया और उसने भगवान से कहा "मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। मैं बहुत ही परेशान हूँ। एक कंजूस को मारने के लिए इतना बड़ा हंगामा क्यों? तुम्हारे कारण मोहन और धनी बनेगा; उसकी भलाई होगी। जो लोग उससे कर्ज ले रहे हैं, उसके चंगुल में फँस रहे हैं। तुम्हारी लीलाओं का गूढ़ार्थ समझ नहीं पा रहा हूँ। मोहन को सबक़ सिखाने की तुम्हारी योजना भी सफल नही हुई।" सुधाम चिंतित हो बोला।

मंद मुस्कान भरते हुए भगवान ने कहा "मैं मोहन को धोखा देना नहीं चाहता। उसे मैंने जो

बताया, सच था। दस लाख अशर्फ़ियों को दस करोड़ अशर्फ़ियाँ बनाने का अवसर उसे मैंने दिया है। अब और दस दिनों की अवधि है। देखते हैं कि इन दस दिनों में क्या उसमें कोई परिवर्तन होगा?'' दस दिन गुज़र गये। भगवान ने सुधाम से कहा ''थोड़ी ही देर में सबका धन सौ गुना अधिक होगा। वचन के अनुसार उन-उन का धन लौटाओ। तुम्हें जो मिलेगा, उससे तुम्हारे बच्चे और उनके बच्चे भी सुख से रह सकते हैं। मेरा काम अभी थोड़ा बाक़ी है। उसे भी पूरा करके चला जाऊँगा।'' कहता हुआ भगवान मोहन के घर गया।

मोहन भगवान को देखकर हँस पड़ा और बोला ''अवधि पूरी हो गयी है। शीघ्र ही यहाँ से भाग निकलो। नहीं तो वंचित सब के सब तुझ पर पथ्थरों की वर्षा बरसायेंगे। फिर से गोवर्धन पर्वत को अपनी उँगली पर उठाने के लिए समीप कोई पर्वत भी नहीं है।''

''मैं भगवान हूँ। नये-नये पर्वतों की सृष्टि कर सकता हूँ। देखो, मेरा कृष्णावतार,'' कहता हुआ गोवर्धन गिरिधारी के अवतार में प्रत्यक्ष हुआ। मोहन आश्चर्य में डूबता हुआ बोला ''क्या तुम सचमुच भगवान हो?'' बिना कुछ बोले भगवान अंतर्धान हो गया।

मोहन काँप उठा। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या करूँ। तब एक-एक करके अंदर आने लगे। सुधाम को जो धन उन्होंने दिया, उससे सौ गुना अधिक उन्हें मिला। कर्ज़ चुकाने जितने भी आये थे, सब उसपर धन वापस लेने के लिए दबाव डाल रहे थे।

रोते हुए मोहन ने सबका हिसाब किया और सबसे कर्ज़ व मूलधन लिया। उनके जाते ही उसमें पश्चात्ताप की भावना और बढ़ गयी।

अब समझ गया कि उसे सन्मार्ग पर ले आने के लिए ही भगवान यहाँ आया था। उसने सोचा कि पहले ही अपने भगवान होने का उसे विश्वास दिलाता तो कितना अच्छा होता।

मोहन पश्चात्ताप की आग में जलता हुआ बीमार पड़ गया। अब वह उस गाँव में रहना नहीं चाहता था। इसलिए दूर के गाँव में जा बसा। वहां वह ग़रीबों की मदद करता हुआ, दान देता हुआ अपना जीवन तृप्ति के साथ बिताने लगा।

# धोखा - लाभ

राजधानी में युवराज का जन्म-दिन मनाया जानेवाला था। उसे देखने गाँव से भास्कर और रुद्र निकल पड़े। दोनों बहुत ही मासूम थे। गाँव के परिचित लोगों ने उन्हें अगाह भी किया कि राजधानी में धोखेबाज़ बहुत होते हैं। सावधान रहना।

वे दोनों राजधानी पहुँचे। बड़े वैभव से मनाये जानेवाले युवराज का जन्म-दिनोत्सव देखने में मग्न रहे। उन्होंने रास्ते में रानी का महल देखा। वह बहुत ही सुंदर और बड़ा महल था। वे उसकी सुंदरता की वाहवाही करने लगे। महल के चारों ओर रंगबिरंगे शीशे की खिड़कियाँ थीं।

भास्कर खिडकियों को गिनने लगा, एक, दो, तीन, सात, सोलह, इकीस, बाईस।

उन्होंने गिनती पूरी भी नहीं कि इतने में नोकदार मूँछवाला एक आदमी अपना रोब जमाता हुआ बोला "कितनी खिड़कियों की गिनती की ?

भास्कर डरता हुआ बोला "सोलह"।

"तो सोलह रुपये दो।" मूँछवाला गरजा।

भास्कर ने थैली में से सोलह रुपये निकाले और उसे दिये। वह आदमी तेज़ी से वहाँ से स्फूचकर हो गया।

रुद्र ने दीनता से कहा "देखा भास्कर, हम कैसे धोखा खा गये"। भास्कर ने कहा "हमने कहाँ धोखा खाया। उल्टे हमीं ने उसे धोखा दिया। मैंने बाईस खिड़कियों की गिनती की। पर उसे दिया सिर्फ सोलह रुपये। हमीं को छे रुपयों का लाभ हुआ है।"

- काशीराम

# ७

(ट्रोय नगर पर चढ़ाई करने के नौ सालों के बाद ग्रीक शिबिर में अंत:कलह छिड़ गया। ग्रीक वीरों में से अग्रगण्य वज्रकाय युद्धभूमि से हट गया। यह सुन्दर मौका पाकर ट्रोजन ग्रीकों पर पिल पड़े और उन्हें बुरी तरह से चोट पहुँचायी। ग्रीकों के एक जहाज़ में आग भी लगा दी। ग्रीकों की यह दुस्थिति वज्रकाय से देखी नहीं गयी। ट्रोजनों के अत्याचार उससे सहे नहीं गये। पुन: उसने युद्धभूमि में प्रवेश किया। ट्रोजन वीरों में से अग्रगण्य वीरसिंह को वज्रकाय ने मौत के घाट उतारा। भुवनसुँदरी के अपहकरणकर्ता मोहन ने सूर्यमंदिर में वज्रकाय के दायें तलुवे को विषैले बाण से बेधकर उसका वध कर दिया।) -बाद

वज्रकाय की मृत्यु के बाद रिवाज़ के मुताबिक़ स्पर्धाएँ हुई। दौड़ की प्रतियोगिता में देवमय जीता। चक्र फेंकने में भूधव अव्वल आया।

वज्रकाय की माँ तरिनी अपने पुत्र के अस्त्र-शस्त्र तथा कवच को शेष ग्रीक योद्धाओं में से उत्तम योद्धा को देना चाहती थी। रूपधर और भूधव साहसपूर्वक वज्रकाय के शव को शत्रुओं से बचाकर ले आये, इसलिए दोनों का दावा था कि वे ही उसके अस्त्र-शस्त्र तथा कवच को पाने के सच्चे हक़दार हैं। किसी में भी उनके दावे के खिलाफ़ बोलने का साहस नहीं था।

राराजा निर्णय ले नहीं पाया कि इन दोनों में से कौन महान योद्धा है। वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध नवद्योत से उसने इस विषय में सलाह माँगी।

"हमारे पराक्रम की बात हमसे भी ज़्यादा हमारे शत्रु जानते हैं। हमारे वीरों के बारे में उनकी राय जानों तो अच्छा होगा। यह जानने के लिए हमारे गुप्तचरों को रात के समय क़िले

की दीवारों के पास भेजो। ट्रोजनों की बातों से हमें स्पष्ट होगा कि हमारे वीरों में से कौन श्रेष्ठ वीर है''। नवद्योत ने राराजा को सलाह दी।

ग्रीकों के गुप्तचर अंधेरे में ट्रॉय क़िले की दीवारों के पास गये। उन्होंने सुना कि दीवार की दूसरी तरफ़ ट्रोजन की कुछ युवतियाँ आपस में बातें कर रही थीं।

वे युवतियाँ आपस में वज्रकाय के शव को ग्रीक वीरों के ले जाने के बारे में ही बातें कर रही थीं। उनकी बातचीत ग्रीक के गुप्तचरों को स्पष्ट सुनायी दे रही थी।

एक ट्रोजन युवती कह रही थी ''हमारे वीर अस्त्रों की बौछार कर रहे थे, फिर भी भूधव ने उनकी कोई परवाह नहीं की। निर्भीक हो वज्रकाय के शव को अपने कंधे पर ड़ालकर ले गया। उसकी वीरता सचमुच ही सराहनीय है।''

तुरंत दूसरी युवती ने कहा ''कंधे पर ड़ालकर ले जाना कोई बड़ी बात नहीं। यह काम तो कोई बाँदी भी कर सकती है। यह तो वीरता ही नहीं हुई। अपनी तथा भूधव की रक्षा करते हुए रूपधर ने तो कमाल का पराक्रम दिखाया। वह हमारे वीरों से लड़ता रहा, डटकर उनका सामना किया और वज्रकाय का शव भी सुरक्षित ले जा पाया। वीर हो तो ऐसा हो।''

बाक़ी युवतियों ने भी उस युवती का समर्थन किया।

गुप्तचरों ने यह समाचार राराजा को बताया। तब राराजा ने वज्रकाय के शस्त्र और
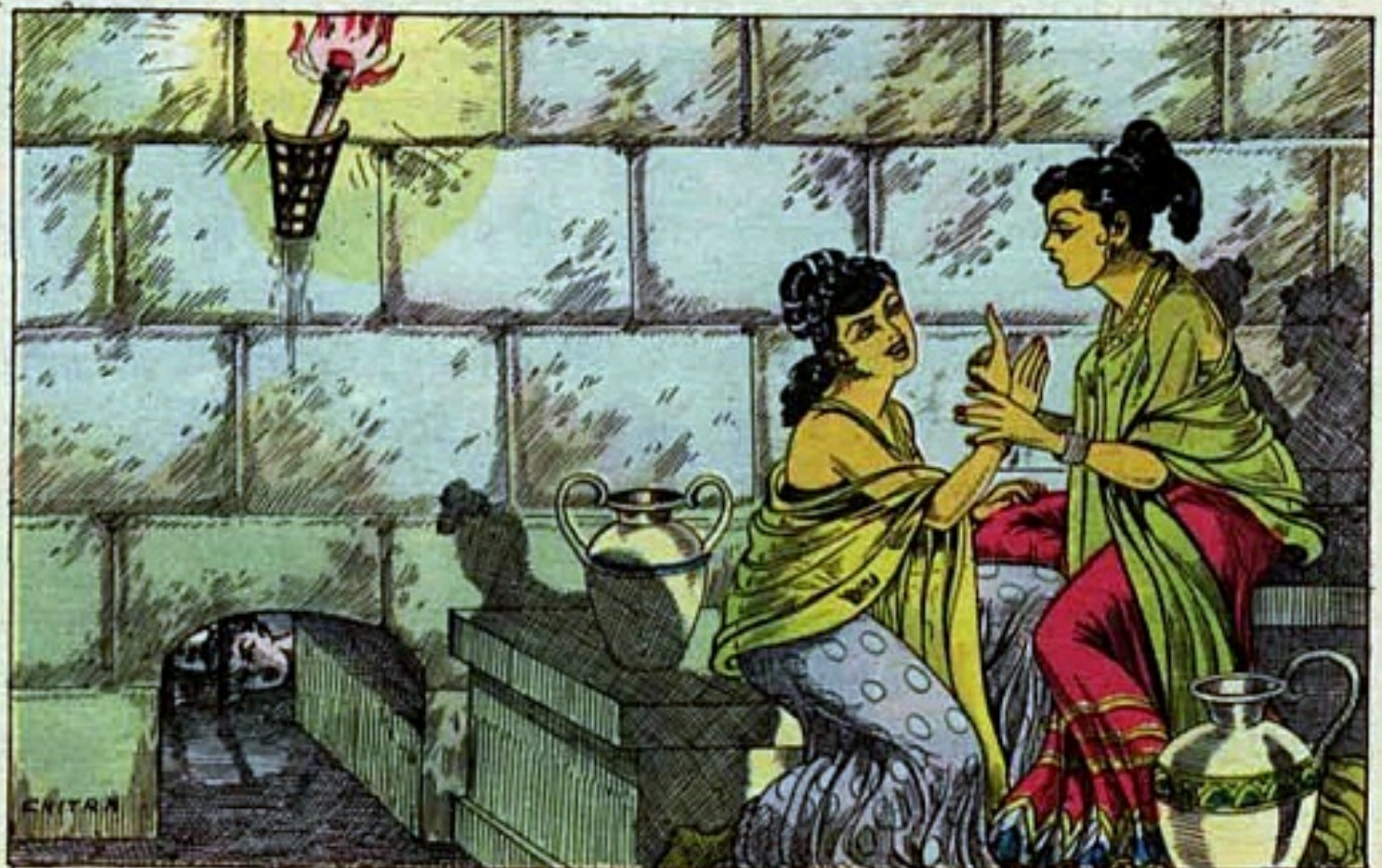
कवच रूपधर के सुपुर्द किये।

यह सचमुच भूधव का अपमान था। उसने सोचा कि वज्रकाय जीवित रहता तो वह कभी ऐसा होने नहीं देता। मेरे इस अपमान पर वह राराजा और रूपधर से प्रतिशोध लेता। वह अब जीवित नहीं है, इसीलिए राराजा ने रूपधर को योद्धा क़रार किया और उसे ही पुरस्कृत किया।

क्रोध से भूधव की मति भ्रष्ट हो गयी। वह अपने को आपे में रख नहीं सका। ट्रोय के आसपास के प्रदेशों में ग्रीकों ने उनकी पशु-संपदां को लूटा था। वे सब पशु अब एक जगह पर थे। उन्माद की अवस्था में भूधव उनके बीच में गया और अंधाधुंध उन्हें मारने लगा। दो सफ़ेद पैरों की बकरी उसे राराजा लगी और तक्षण ही उसने उसका सर काट दिया। दूसरी बकरी उसे रूपधर लगी, तो उसने उसे बाँध दिया और उसे चाबुक से मारने लगा। इतना सब कुछ करने के बाद उसका आवेश ठंडा नहीं हुआ। इसके बाद वह समुद्री तट पर गया और कटार से अपने को भोंककर आत्महत्या कर ली।

आवेश में आदमी अंधा हो जाता है। उसे मालूम नहीं हो पाता कि वह क्या करें और उसे क्या करना चाहिये। ऐसे समय पर मनोबल चाहिये। चाहिये आत्मधैर्य। जिनमें इनका अभाव होता है, वे परिस्थिति का साहसपूर्वक सामना नहीं कर पाते। अपना संतुलन खो देते हैं और अपना अंत कर डालते हैं। भूधव वीर अवश्य था, पर भावुक अधिक। भावुकता के बहाव में वह बह गया। अपने को नियंत्रण में रख नहीं

स्थिति में संभव नहीं।''

इस कार्य को साधने के लिए राराजा ने रूपधर और देवमय को एक जहाज़ में भेजा। लिम्नोस द्वीप ग्रीकों के शिबिरों से चालीस मील की दूरी पर है। ग्रीक जब वहाँ पहुँचे तब धनधव व्रण से पीड़ित था। रूपधर अपने कुटिल उपायों के लिए प्रसिद्ध था। उसने मीठी बातों का जाल बिछाकर उसे फँसाना चाहा, लेकिन देवमय को यह क़तई पसंद ना था। उसने ऐसा होने नहीं दिया।

देवमय ने रूपधर से कहा ''हमारी बातों और हमारे कामों में ईमानदारी होनी चाहिये। किसी को गुमराह करके अपना उल्लू सीधा करना गलत है। इससे तात्कालिक रूप से लाभ हो सकता है, परंतु भविष्य में सच्चाई प्रकट होने पर अपार नष्ट भी पहुँच सकता है। इसलिए आवश्यक तो यह है कि हम सच बताएँ। उससे अपनी आवश्यकता बताएँ और मनावें। उसे विश्वास दिलावें कि हमारा लक्ष्य पवित्र है।''

पाया। सोचने की शक्ति भी वह खो बैठा। यही उसकी आत्महत्या का कारण है।

प्रताप ने ज़ोर दिया कि भूधव के शव का वीरोचित दहन-संस्कार नहीं होना चाहिये, उसे तो गाड़ देना चाहिये। किन्तु रूपधर ने उसे टोका और भूधव के शव का दहन-संस्कार वीरोचित पद्धति में करवाया।

वज्रकाय की मृत्यु के कारण ग्रीकों में निराशा फैल गयी, उनका उत्साह ठंडा पड़ गया। इस स्थिति में ज्योतिष शास्त्र के दिग्गज कांशुक ने भविष्यवाणी बतायी। उसने कहा ''लिम्नोस द्वीप का शासक है धनधव। उसके पास देवताओं के दिये धनुष और बाण हैं। उन्हें पाने पर ही ग्रीकों की विजय हो सकती है अथवा किसी भी

देवता धनधव को सपने में दिखायी पड़े। उन्होंने उससे कहा ''तुम ट्रोय जाओ। उस युद्ध में तुम्हें कीर्ति प्राप्त होगी। साथ ही अधिकाधिक लाभ भी होगा। तुम और वज्रकाय के पुत्र नवयोध ट्रोय नगर के पतन के कारक बनोगे। तुम दोनों में से कोई भी ना हो तो उस नगर का पतन ही नहीं हो सकता।''

देवताओं के आदेशानुसार धनधव दिव्य धनुष और बाणों को लिये ग्रीकों के साथ युद्धक्षेत्र

में आया। ग्रीक शिबिरों में कुशल शल्य चिकित्सक थे। उन्होंने धनधव को नहलवाया और सुलाया। व्रण की शल्य चिकित्सा की।

शीघ्र ही धनधव का व्रण ठीक हो गया। जिस दिन वह उठ खड़ा हो पाया, उसी दिन उसने मोहन को धनुर्युद्ध के लिए आह्वानित किया। उस युद्ध में धनधव का प्रथम बाण मोहन को जा नहीं लगा, परंतु दूसरा बाण मोहन के बायें हाथ को जो लगा, जिसमें वह धनुष संभाला हुआ था। तीसरे बाण से उसकी दाईं आँख चली गयी। चौथा बाण मोहन के पैर के तले जा लगा।

मोहन की ख़तरनाक हालत देखकर प्रताप चाहता था कि तुरंत उसका काम तमाम कर दिया जाए। किन्तु मोहन लँगडाता हुआ भाग गया। वह प्रताप के हाथ नहीं आया। वह किसी प्रकार क़िले के अंदर जा पहुँचा। मोहन की चिकित्सा करने के लिए ऐडा पर्वत से टोकरी भर की औषधियाँ मंगायी गयीं। किन्तु उनके पहुँचते - पहुँचते उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

मोहन के मरते ही उसके दो भाई चंद्र और अरिभयंकर आपस में लड़ने लगे कि भुवनसुंदरी मेरी पत्नी होगी। अरिभयंकर ने ही युद्ध में अधिक पराक्रम दिखाया। इसलिए उसके पिता वर्धन ने उसी का समर्थन किया। लेकिन भुवनसुंदरी भूल नहीं पायी कि वह स्पार्टा की रानी है और मोहन की पत्नी। वह ग्रीकों से जा मिलने एक दिन रात को क़िले के दीवार पर गयी और एक रस्सी नीचे लटका दी। उस समय एक प्रहरी ने यह देखकर उसे पकड़ लिया और

बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी।''

चंद्र सूर्य के मंदिर में हेमा के पिता का अतिथि बनकर रह रहा था। रूपधर उसे ढूँढता हुआ वहाँ पहुँचा। ''भीतिवश मैं यहाँ नहीं आया। इसी मंदिर में मोहन ने वज्रकाय को छल से मारा था। मुझे दुख है कि अब तक उस पाप का प्रायश्चित्त नहीं हुआ। किसी प्रांत में मेरे सुरक्षित रहने का प्रबंध किया जाए तो मैं ट्रोय नगर के रहस्यों को बताने सन्नद्ध हूं।'' चंद्र ने रूपधर से कहा।

रूपधर ने खुशी-खुशी उसके प्रस्ताव को स्वीकार किया। ''आनेवाली गर्मी के दिनों में ट्रोय नगर का पतन निश्चित है। पर उसके पहले तीन कामों का होना आवश्यक है। पहला- पीसा में भूम्रमुख की रीढ़ की हड्डी है। उसे अपने शिबिर में ले आओ। दूसरा- नवयोध को युद्धभूमि में ले आना होगा। तीसरा - बुद्धिमती देवी की मूर्ति को क़िले से चुराकर ले आना होगा।जब तक वह मूर्ति क़िले में होगी तब तक ट्रोय नगर की दीवारों को आप लोग तोड़ नहीं पायेंगे''। चंद्र ने रूपधर को ट्रोय संबंधी रहस्य बताये।

ये रहस्य जैसे ही मालूम हुए, राराजा ने भूम्रमुख की रीढ़ की हट्टी को ले आने कुछ वीरों को पीसा भेजा। वज्रकाय का पुत्र नवयोध बारह वर्ष का बालकुमार था। स्कैरास में वह रह रहा है। उसे ले आने रूपधर, रक्तवर्ण तथा देवमय नौका में निकल पड़े। बालक होते हुए भी नवयोध

राजमहल ले आया। अरिभयंकर ने उससे ज़बरदस्ती शादी की।

चंद्र विरक्त हो गया और ट्रोय नगर छोड़कर ऐड़ा पर्वत पर निवास करने निकल पड़ा। कांशुक ने राराजा से बताया कि किसी भी प्रकार चंद्र पकड़ लिया जाए और उससे ट्रोय के रहस्यों को उगलवाया जाए। तब ट्रोय नगर पर विजय पाना तथ्य होगा। राराजा ने रूपधर को यह जिम्मेदारी सौंपी। उसने उससे कहा ''यह हमारे लिए बड़ा हो अच्छा मौक़ा है। चंद्र अपने लोगों से नाराज़ है। वह ट्रोय के समस्त रहस्यों को जानता है। इन रहस्यों को जानने पर हम ट्रोय पर आसानी से कब्जा पा सकते हैं। चंद्र हमारे लिए अनायास ही प्राप्त वरदान साबित हो सकता है। शत्रु की मित्रता

साहसी था। बचपन में ही वह युद्ध-कला से भली-भाँति परिचित था। जैसे ही रूपधर, रक्तवर्ण तथा देवभय ने उससे युद्ध में भाग लेने की प्रार्थना की, झट उसने मान लिया। नवयोध ने जैसे ही रणरंग में पाँव रखा, उसे अपने पिता की प्रेतात्मा दिखायी पड़ी। वज्रकाय के अस्त्रों को रूपधर ने नवयोध को दिया। कम उम्र के होते हुए भी युद्धक्षेत्र में नवयोध ने अपने पिता का यश सुस्थिर किया। अलावा इसके , युद्ध - व्यूह की प्रणालियों में भी उसने ग्रीकों को अमूल्य सलाहें दीं।

अब केवल शेष कार्य था, बुद्धिमति की मूर्ति की चोरी। इस काम को करने का बीड़ा उठाया रूपधर और देवमय ने। रूपधर ने जान बूझकर देवमय से अपने को खूब पिटवाया। रक्त भी बहने लगा। शरणार्थी बनकर उसने ट्रोय नगर में प्रवेश किया। केवल भुवनसुंदरी ही उसे पहचान पायी। वह उसे अपने घर ले गयी। स्नान हो जाने के बाद उसे भोजन खिलाया और उससे कहा'' मैं एक क़ैदी की तरह यहाँ जीवित हूँ। अपना देश लौटना चाहती हुँ। यह रहस्य केवल मेरी सांस जानती है। वह मेरे ही पक्ष में है। अब बताओ कि तुम्हारा क्या कार्यक्रम है?'' भुवनसुन्दरी ने पूछा। ठीक उसी समय पर वर्धन की पत्नी वहाँ आयी। भूधर ड़र से कॉप उठा। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना की कि मेरे बारे में किसी को मालूम ना हो। वर्धन की पत्नी ने इस रहस्य को रहस्य ही रहने दिया। अलावा इसके, उसने उसके लौटने के आवश्यक प्रबंध भी किये।

लौटते समय रूपधर ने बुद्धिमति की मूर्ति की चोरी की। दीवार के उस ओर उसी की प्रतीक्षा में खड़े देवमय को मूर्ति सौंपी। दोनों खिली चाँदनी में शिबरों की ओर जाने लगे। रास्ते में रूपधर के मस्तिष्क में एक कुटिल योजना जगी। वह चाहता था कि मूर्ति की चोरी का श्रेय उसे ही प्राप्त हो। उसने एक क़दम पीछे हटकर उसे मारने तलवार उठायी। तलवार की साया को जैसे ही देवमय ने देखा, पीछे घूम पड़ा। उसने रूपधर की तलवार छीन ली। उसके हाथों को मंरोड़कर पकड़ लिया और उसे मारते हुए शिबिर ले गया।

## 'चन्दामामा' की ख़बरें

### तीन, केवल तीन

फ़रवरी और मार्च में जिन चार प्रांतों में चुनाव हुए, उनमें से अरुणाचल प्रदेश भी एक है। कामेंग जिले के त्रिशिनो बुरागोन के निर्वाचित क्षेत्र में चकू नामक एक गाँव है। जंगलों में से होते हुए तीन दिनों की सफ़र के बाद ही इस गाँव में पहुँच सकते हैं। चकू गाँव के चुनाव-अधिकारियों ने मत-पत्र, स्याही आदि आवश्यक सामग्री का सुव्यवस्थित प्रबंध किया। लेकिन उस गाँव के मत-दाता हैं केवल तीन। हमारे देश के जन-तंत्र की विशिष्टता का परिचायक है यह।

### विमान - चालक के बिना विमान

फ़रवरी २६ को अमेरीका के हावर्ड से एक जेप्लिन वायुयान उड़ा। वायुमान जब सत्तर मीटर की ऊँचाई पर गया, तब दिल का दौरा पड़ने से विमान-चालक वहीं का वहीं मर गया। किन्तु वह वायुमान रुका

नहीं। दो घंटों तक उड़ता हुआ उत्तर कालिफोर्निया के निर्जन प्रदेश में जाकर वह उतरा। लोगों को डर लग रहा था कि वह शायद उनके घरों पर गिरेगा, परंतु ऐसा नहीं हुआ।

### थैली में बिल्ली

बंगला देश का चान्दपुर, राजधानी ढाका से ६५ किलोमीटर दूर है। डाक की एक थैली में ख़तों के साथ एक बिल्ली ने भी यात्रा की। लेकिन उसके गले में पते का काग़ज लटका हुआ नहीं था। डाक-घर में जैसे ही थैली खोली गयी, म्याव म्याव करती हुई वह बिल्ली बाहर आयी और भाग गयी। वह थैली जब रेल-गाड़ी में फ़ेंकी गयी थी या जब गम्य-स्थान पर डाल दी गयी, तब भी बिल्ली ने चूँ तक नहीं की। फ़रवरी, पाँच को यह घटना घटी। अब भी डाक के अधिकारियों की समझ में नहीं आ पाया कि आख़िर यह बिल्ली थैली में आयी कैसे?

### सफ़ाई

अंटार्किटिका का नाम सुनते ही हमारी आँखों के सामने बरफ़ ही बरफ़ दिखाई पड़ती है। वहाँ मेकमर्डी स्टेशन नामक एक छोटा सा शहर है। गर्मी के दिनों में इसकी आबादी है १,२०० और सर्दी के दिनों में इसकी आबादी २०० मात्र है। यहाँ की जनता गाँव के बाहर के खड्डों में कूड़ा-करकट जलाती थी। खाना खाने के बाद जो पदार्थ बच जाते थे, वे उन खड्डों में ही फेंकते थे। इन्हें खाने के लिए समुद्री कौवे जैसे पक्षी आते थे। वह बड़ा ही कलुषित प्रांत हुआ करता था। पर्यावरण के संरक्षकों ने वहाँ के लोगों को सफ़ाई के बारे में समझाया। अब स्थिति में सुधार आया है।

## चंद्ररेखा का स्वयंवर

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया और शव को उतारा। उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् मौन श्मशान की ओर चलता रहा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मैं मानता हूँ कि तुम जैसे साहसी विरले ही होंगे। इस आधी रात को, कौन ऐसा माई का लाल होगा, जो निर्भय घूम पाये। तुम्हारा आग्रह और कठोर दीक्षा वर्णनातीत हैं। लेकिन कभी-कभी सीमाओं को लाँघती हुई ऐसी दीक्षा और आग्रह कुछ भी साध नहीं पाते। उनकी तपस्या व परिश्रम व्यर्थ हो जाते हैं। बहुत-से ऐसे अवसर भी होते हैं, जब कि अयोग्य और असमर्थ भी भाग्यदेवता की कृपा के बल पर बहुत कुछ पा लेते हैं। उन्हें जो प्राप्त नहीं होना चाहिए, प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे कितने ही उदाहरण हमें मिलेंगे। मैं तुम्हें एक अपूर्व सुंदरी की कहानी सुनाऊँगा,

## बैताल कथा

जिसने स्त्री-सहज करुणा भाव से एक अयोग्य से विवाह किया और उसे उन्नत शिखर पर बिठा दिया। अपनी थकावट दूर करते हुए यह कहानी सुनते जाओ''। बेताल यों कहने लगा।

कनकपुर राज्य का राजा था जयकेतन। उसकी पुत्री चंद्ररेखा अद्भुत सुँदरी थी। शतरंज में वह अति निपुण थी। स्वयं राजा जयकेतन शतरंज की क्रीडा में निपुण था, इसलिए उसने अपनी पुत्री को इस खेल में बहुत ही अच्छी तरह शिक्षित किया।

एक दिन चंद्ररेखा के विवाह की बात उठी। तब उसने अपने पिता से कहा ''पिताश्री, मुझे शतरंज में जो हरायेगा, उसीसे मैं विवाह करूँगी। मुझसे खेलकर पहली बार जो राजकुमार हारेगा, उसे सौ कोड़े मारे जाए। जो दूसरी बार हारेगा, उसे अपने कुलदेवता के नाम पर शपथ लेनी होगी कि जीवन में आगे कभी भी विवाह का प्रस्ताव नहीं रखूँगा। अगर वह तीसरी बार भी हार जाय तो उसे फाँसी की सज़ा दी जाए। आप मेरी इन शर्तों की घोषणा करवाइये और उन्ही राजकुमारों को मेरे साथ खेलने की अनुमति दीजिये, जो मेरे उक्त तीनों शर्तों को स्वीकार करने तैयार हों''।

अपनी बेटी की ऐसी विचित्र इच्छा पर जयकेतन चकित हुआ। वह अपनी बेटी का हठ व स्वभाव जानता था, इसलिए उसने उसी की इच्छा के अनुसार घोषणा करवायी।

अद्भुत व अद्वितीय सुँदरी चंद्ररेखा से विवाह करने के उद्देश्य से कुछ राजकुमारों ने उसके साथ शतरंज का खेल खेला। हाँ, वे भी इस खेल में थोड़ा-बहुत ज्ञान अवश्य रखते थे, किन्तु चंद्ररेखा जैसी निपुण खिलाड़ी के सामने वे टिक नहीं पाये। वे स्पर्धा में भाग लेते थे और हार भी जाते थे। यह सिलसिला ज़ारी रहा। स्वयंवर के नियमों के अनुसार सौ कोड़ों की मारें खाते और अपमानित होकर चुपचाप लौट जाते थे। कोई भी दूसरी बार उससे खेलने तैयार नहीं था।

चारुशीला नगर के राजकुमार सूर्यतेज को इस विचित्र स्वयंवर का समाचार मालूम

हुआ। वह अविवाहित था। अपने गुप्तचरों के द्वारा पहले ही चंद्ररेखा के अपूर्व सौंदर्य के बारे में सुन चुका था। तब तक सूर्यतिज को शतरंज के खेल के बारे में थोड़ा-सा भी ज्ञान नहीं था। उसने अब निश्चय किया कि इस खेल को बखूबी सीखूँ। विश्वनाथ शतरंज का श्रेष्ठ खिलाड़ी था। वह शतरंज की अनेकों स्पर्धाओं में सर्वप्रथम आया था। सूर्यतिज ने उससे इस क्रीडा की बारीकियाँ सीखीं। छह महीने उसने बड़ी ही तत्परता के साथ उससे शिक्षा पायी। इसी धुन में उसने अपने आपको खो दिया।

एक दिन विश्वनाथ ने सूर्यतिज से कहा "आपकी शिक्षा समाप्त हो गयी है। आप इस क्रीडा में निष्णात हो गये हैं।" सूर्यतिज ने उसे बहुमूल्य भेंट दीं और उसे बिदा किया। चंद्ररेखा से शतरंज खेलने स्वयं निकल पड़ा।

प्रमुख राजकर्मचारियों तथा चंद्ररेखा के माता-पिता की उपस्थिति में स्पर्धा का श्रीगणेश हुआ। चंद्ररेखा का सौंदर्य देखकर सूर्यतिज स्तंभित रह गया। उसे लगा कि उसका सौंदर्य वर्णनातीत है। जो उसने सुन रखा था, उससे कहीं कई गुना अधिक यह सुँदरी है। स्पर्धा ज़ोर-शोर से चल रही थी। शतरंज के मोहरों को दोनों बड़ी चुस्ती व चालाकी से चला रहे थे। सूर्यतिज भी अपनी पूरी अक्ल लड़ाकर खेल रहा था। दो पहरों के खेल के बाद चंदरेखा ने सूर्यतिज के राजा को बंदी बना दिया। राजकुमारी की जीत पर सबने हर्षध्वनियाँ की; उसका अभिनंदन

किया। दो सैनिक कोड़े लेकर जब सूर्यतिज की ओर बढ़ रहे थे, तब उसने करुणा-भरी दृष्टि से चंद्ररेखा को देखा। सबने समझा कि सूर्यतिज अब अपना राज्य लौट जायेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। वह दूसरी बार चंद्ररेखा से शतरंज खेलने सन्नद्ध हो गया।

"जानते हो ना, दूसरी बार राजकुमारी के हाथों हारने पर क्या दंड मिलेगा, किस नियम का पालन करना होगा ? तुम्हें अपने कुलदेवता के नाम पर शपथ लेनी होगी कि जीवन भर अविवाहित ही रहूँगा।" महामंत्री आदित्य ने सूर्यतिज को आगाह किया।

"इस नियम को दुहराने की कोई ज़रूरत नहीं। क्योंकि किसी दूसरी कन्या से मेरे विवाह का प्रश्न ही नहीं उठ्ता। केवल आपकी तृप्ति के लिए मैं शपथ ले रहा हूँ," यों कहकर उसने अपने कुलदेवता शिव भगवान के नाम पर शपथ ली।

दूसरी बार खेल शुरू हुआ। अब इस बार सूर्यतेज ने अपनी समस्त शक्तियाँ लगायीं और चालें चलने लगा। किन्तु चंद्ररेखा बिना किसी घबराहट के शांत खेलती जाने लगी, मानों उसे प्रत्यर्थी की परवाह ही नहीं। वह बड़ी तेज़ी से अपने मोहरों को बढ़ा रही थी।

उसका वेग तथा नैपुण्य देखकर सूर्यतिज चकित रह गया। खेल के बीच में वह एक बार उसके रूप को निहारता रहा, जिससे उसका ध्यान बँट गया। उसकी एकाग्रता टूटी। मंत्री की गोटी को आगे ले जाने के बदले हाथी की गोटी को आगे ले गया। वह चाहता तो था कि मंत्री की गोटी को आगे बढाऊँ, परंतु ध्यान बँट जाने के कारण उससे ग़लती हो गयी। उस दशा में यह बहुत ही बड़ी ग़लती थी। अब चंद्ररेखा ने उसकी ग़लती का तुरंत फ़ायदा उठाया और सूर्यतिज को पराजित किया। फिर एक और बार सबने चंद्ररेखा का हर्षध्वनियों के साथ अभिनंदन किया।

सबने निर्णय कर लिया कि सूर्यतिज का अपना राज्य लौटना अब निश्चित है। किन्तु वह तीसरी बार भी खेलने के लिए उद्यत

हुआ। उसके हठ को देखकर सभी को आश्चर्य हुआ। राजा जयकेतन ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा "राजकुमार, तुम युवक हो। क्षत्रियोचित विद्याओं में पारंगत हो। तुम्हारे सामने सुनहरा भविष्य पड़ा हुआ है। एक शासक बनकर तुम्हें कितनी ही जिम्मेदारियां निभानी हैं। इन्हें सब भुलाकर अपने प्राण को क्यों दाँव पर लगा रहे हो ? मेरी बात मानो और यह खेल यहीं समाप्त करो। अच्छा यही होगा कि तुम लौट चलो।"

सूर्यतिज मुस्कुराता हुआ बोला "आपकी सलाह के लिए धन्यवाद। बड़े तो कहते हैं कि जय-पराजय दैवाधीन हैं। हो सकता है, इस बार जीत मेरी हो"।

राजकुमारी उसकी बातें ध्यान से सुनती रही। उसके हठीले स्वभाव पर वह चकित रह गयी। उसे लगा कि अपने प्राणों को दाँव पर लगाकर खेलने के लिए तैयार यह राजकुमार अवश्य ही अनोखे व्यक्तित्व का है। दो तीन क्षणों तक वह उसे एकदम देखती रही और फिर अपने पिता से बोली "पिताश्री, मैं अपनी हार स्वीकार करती हूँ"। लज्जा से सिर झुकाती हुई उसने कहा।

वहाँ उपस्थित लोगों को उसकी बातें सुनते हुए बहुत ही आश्चर्य हुआ। उनकी समझ में नहीं आया कि जिस राजकुमारी ने दो बार आसानी से हराया, वहीं क्यों अपनी हार बिना किसी होड़ के स्वीकार कर रही है?

राजा जयकेतन ने स्थिति ताड़ ली और बेटी को बधाई देते हुए कहा "सही समय

पर सही निर्णय लिया है तुमने बेटी।"

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा "राजा विक्रमार्क, जब सूर्यतिज स्पर्धा में प्रथम बार हार गया, तभी वह जान चुका होगा कि चंद्ररेखा को जीतना असंभव है। फिर भी दूसरी बार और तीसरी बार भी उससे खेलने के लिए सन्नद्ध होना क्या उसकी मूर्खता की पराकाष्ठा नहीं? अच्छा हुआ, स्त्री सहज दया-भाव से उसने अपनी हार मान ली। नहीं तो, सूर्यतिज को फाँसी होती। राजा जयकेतन का भी यह कहना कि तुमने सही समय पर सही निर्णय लिया है, अनुचित तथा असंगत लगता है। बेटी की प्रशंसा में कहे गये उसके वचन अर्थहीन लगते हैं। मेरे इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा"।

विक्रमार्क ने उत्तर दिया "सूर्यतिज कोई मूर्ख नहीं, जो यह ना समझ पाये कि मेरी हार चंद्ररेखा के हाथों निश्चित है। क्योंकि जब वह पहली बार हार गया तब वह जान चुका था कि चंद्ररेखा इस खेल में कितनी प्रवीण है। दूसरी और तीसरी बार भी उससे खेलने तैयार इसलिए हुआ कि वह उसे बहुत चाहने लगा। उसके हृदय में उसके रूप और तीक्षण बुद्धि ने घर कर लिया। चंद्ररेखा से भी यह रहस्य छिपा नहीं था। स्वयंवर एक बहाना मात्र था। वह तो देखना चाहती थी कि इन राजकुमारों में से कौन ऐसा होगा, जो अपना प्राण भी दाँव पर लगाने सन्नद्ध है। सूर्यतिज ही एक ऐसा युवक था, जिसने हारकर भी अपनी हार नहीं मानी। तीनों प्रतिस्पर्धाओं में उसने भाग लिया। चंद्ररेखा ऐसे ही सुयोग्य वर की तलाश में थी। जब उसकी आशा सफल हुई, तब उसने बिना हारे ही अपनी हार मान ली। यह उसकी तीक्षण बुद्धि का परिचायक है। इसमें दया या करुणा की कोई बात ही नहीं। राजा जयकेतन ने अपनी पुत्री के मनोभाव को जाना और इसीलिए उसका अभिनंदन किया। विक्रमार्क के मौन-भंग में सफल बेताल शव को लेकर ग़ायब हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा।

**आधार - रघुनंदत मिश्रा की रचना**

# होशियारी

हेलापुरी का निवासी प्रसाद का बेटा माधव आठ साल का था। वह सबसे छोटा लड़का था, इसलिए बहुत ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा गया। सब बंधु-जन उसकी प्रशंसा करते थे कि वह होशियार और चुस्त लड़का है।

बहुत ही अक़्लमंद माना जानेवाला माधव एक विषय में बड़ी ही मूर्खता के साथ पेश आया था। एक बार उसका एक रिश्तेदार उसके घर किसी काम पर आया। लौटने के पहले उसने अपनी जेब से दो सिक्के निकाले। एक था चाँदी का और दूसरा तांबे का। उसने उन दोनों सिक्कों को माधव के सामने रखा और उससे कहा कि इन दोनों में से एक लो। माधव ने तुरंत तांबे का सिक्का लिया।

माधव के इस चुनाव से रिश्तेदार चकित रह गया। होशियार माने जानेवाले माधव ने चाँदी के सिक्के को छोड़ दिया और तांबे के सिक्के को लिया। ऐसा उसने क्यों किया, यह रिश्तेदार की समझ में नहीं आया। वह उसकी मूर्खता पर अपने आप हँसता रहा और चाँदी के सिक्के को जेब में डालकर वहाँ से चला गया। माधव की होशियारी पर उसे भी विश्वास था। किन्तु इस घटना से स्पष्ट मालूम हुआ कि वह इतना होशियार नहीं है, जितना समझा जा रहा है। उसे लगा कि वह एक सामान्य बालक है।

यह घटना नहीं छिपी। सबको मालूम हो गयी। गाँव भर में यह बात फैली। सब समझते थे कि माधव अपने पिता से भी अधिक होशियार है और बड़ा होने पर अपनी अक़्लमंदी के बूते पर व्यापार में लाखों कमायेगा। इस घटना के बाद वे समझने लगे कि वह मासूम और मूर्ख है।

उस समय से माधव की मूर्खता का मज़ाक उड़ाने और अपने मनोरंजन के लिए गाँव के लोग उसके सामने चाँदी व तांबे के सिक्के रखते

सरन तेजा

थे और उससे कहते थे कि इनमें से एक लो। हर बार वह तांबे का सिक्का ही लेने लगा। उसके इस निर्णय पर लोग हंस पड़ते थे। लोगों ने निर्णय कर लिया कि यह बालक अवश्य ही मूर्ख है।

एक दिन प्रसाद के घर विनोद नामक एक रिश्तेदार आया। रिश्ते में वह माधव का मामा था। माधव के बारे में गाँववालों की टिप्पणियाँ उसके कानों में पड़ीं। यह सुनकर उसे बहुत ही दुख हुआ। प्रसाद की संतान में से माधव ही लड़का था। विनोद को लगा कि माधव बड़ा होने के बाद अपने पिता के व्यापार को संभाल नहीं पायेगा। हो सकता है, उसकी संपत्ति भी छिन जाए और पूरा परिवार मुश्किलों में फंस जाए। इस बालक से परिवार को हित से अधिक अहित होने की ही संभावना है।

अपने सारे काम पूरे होने के बाद जिस दिन विनोद अपना गाँव लौट रहा था, उस दिन उसने माधव को बुलाया। उसके सामने चाँदी और तांबे के सिक्के रखे। उससे कहा "जो चाहते हो, लो"।

माधव ने तुरंत तांबे का ही सिक्का लिया। माधव की मूर्खता पर विनोद को और लोगों की तरह हँसी नहीं आयी। उसमें उसके प्रति सहानुभूति पैदा हुई। उसने माधव से पूछा "बेटे, मूल्यवान चाँदी के सिक्के को लिये बिना तांबे के सिक्के को ही हमेशा क्यों लेते हो? क्या तुम इतने मूर्ख हो कि इन दोनों का मूल्य भी समझ नहीं पाते ?"

माधव ने धीरे-धीरे कहा "मामाजी, अगर मैं चाँदी का सिक्का ही लेता रहा तो गाँव का कोई भी आदमी अपने विनोद के लिए मुझसे खेलने नहीं आता। उस हालत में तांबे के सिक्कों से भी मैं वंचित रह जाता। इस प्रकार सदा तांबे के सिक्कों को लेने ही के कारण ढेर के सिक्के मेरे पास जमा हो गये।" कहते हुए कमरे के अंदर ले जाकर उसने विनोद को सिक्कों का ढेर दिखाया।

इतने सारे तांबे के सिक्कों को देखकर विनोद स्तब्ध रह गया। वह कुछ कहना चाहता था तो माधव ने उसे टोककर कहा "आप किसी से कुछ मत कहिएगा"।

# हमारे देश के क़िले - ३

## राजपूतों के क़िले - १

चित्रांगद मोरी ने सातवीं शताब्दी में चित्रकूट क़िले का निर्माण किया। सौ वर्षों के बाद सुप्रसिद्ध गुहिल नायक बप्पा रावल ने इस क़िले का नाम रखा चित्तोर। उसने इसे अपना निवास-स्थल बनाया।

उसके वंशज शिशोदियों ने चित्तोर पर लगभग आठ सौ सालों तक शासन चलाया। क़िले के प्रांगण में अब भी विजयस्तंभ मौजूद है। कुंभराणा ने १४५८ में माल्वा सुल्तान पर विजय पायी। इस विजय के प्रतीक के रूप में उसने यह विजयस्तंभ बनवाया। नौ मंज़िलोंवाले इस स्तंभ की ऊँचाई है ३६ मीटर। इसके निर्माण- कार्य में क़रीबन दस साल लगे। चित्तोर क़िला विस्तार में हमारे देश के समस्त क़िलों से विशाल है। इस क़िले के अंदर बहुत से कुएँ हैं, जिनका पानी, पीने तथा खेती करने के काम में लाया जाता था। हमले दो सालों तक बराबर होते भी रहें तो भी यह क़िला टिक सकता है। इन दो सालों तक आहार-पदार्थों की कमी की बात ही नहीं उठती।

१५६७ में अकबर के नेतृत्व में मुगल सेना ने इस क़िले को घेर लिया। राणा उदयसिंह ने क़िले की सुरक्षा का भार जयमल
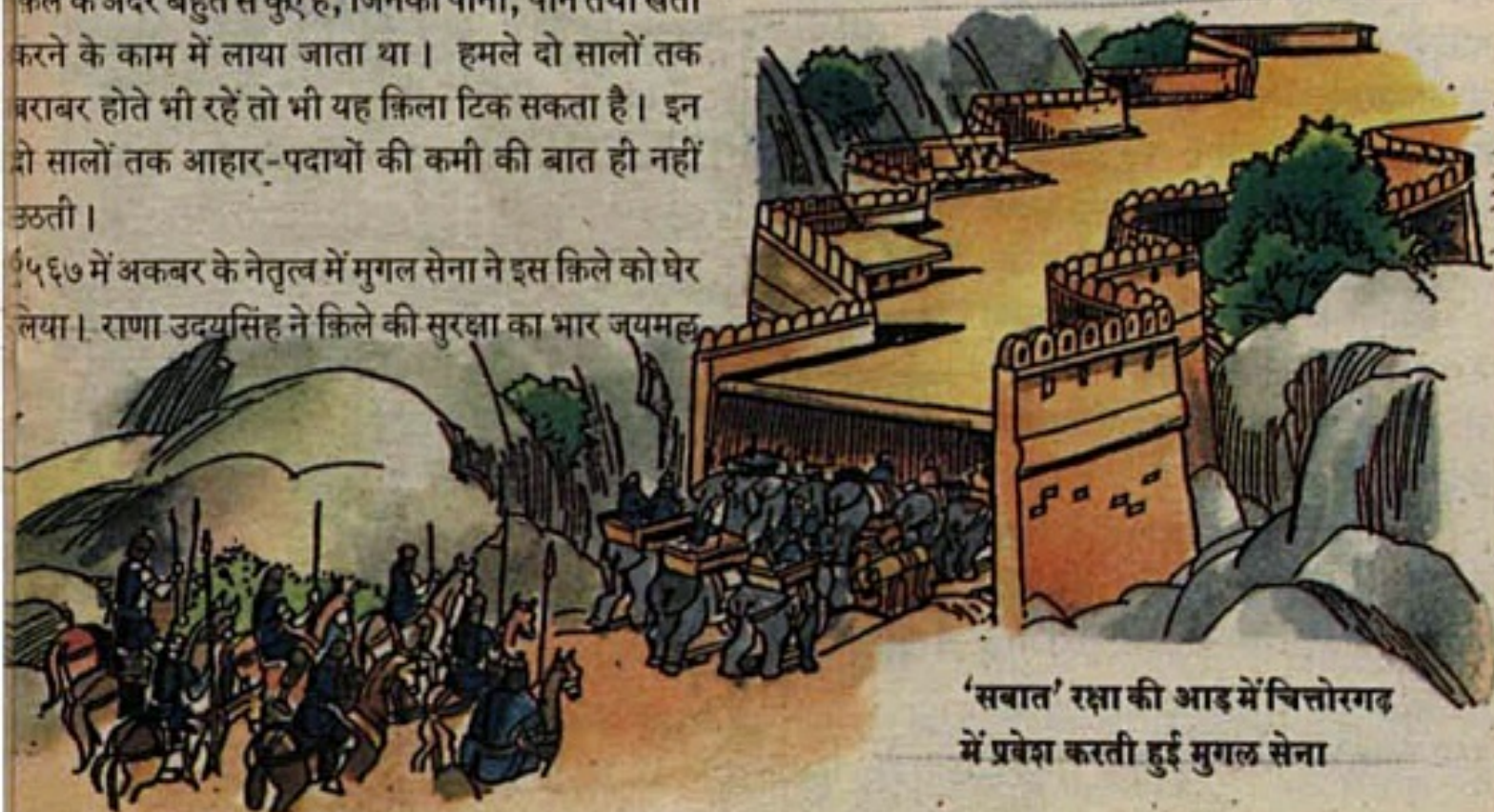
'सबात' रक्षा की आड में चित्तोरगढ में प्रवेश करती हुई मुगल सेना

और पट्टा नामक दो सेनाधिपतियों को सौंपा और स्वयं अरावली पर्वतों पर चला गया।

जयमल्ल के नेतृत्व में उसके अनुयायिनों ने क़िले की रक्षा के लिए वीरोचित युद्ध किया। मुगल सेना आगे नहीं बढ़ सकी। चार महीनों के घेराव के बाद एक दिन अकस्मात तोप की गोली से जयमल्ल तीव्र रूप से घायल हुआ। उसकी मृत्यु से राजपूतों की हिम्मत टूट गयी। मुगल सेना ने उनकी निराशा का लाभ उठाकर क़िले पर विजय पायी।

क़िला मुग़लों के अधीन हो गया किन्तु राणा उदयसिंह उनके सामने सिर झुकाने सन्नद्ध नहीं हुआ। उसके पुत्र राणा प्रताप तथा उसके अनुयायियों ने कठोर प्रतिज्ञा की कि जब तक क़िला अपने अधीन ले लिया नहीं जायेगा तब तक वे सुखी जीवन से दूर रहेंगे।

ऐसी प्रतिज्ञा करनेवालों में से लोहार भी थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक वे क़िले में वापस नहीं लौटेंगे, तब तक वे गाड़ियों में ही रहेंगे। उस दिन से वे गाड़ियों में ही संचार करते रहे और अपना जीवन बिताते रहे। वे 'गडिया लोहार' के नाम से पुकारे जाते थे। जब तक क़िला अधीन नहीं हुआ तब तक याने लगभग चार सौ सालों तक अपनी प्रतिज्ञा निभाते रहे।

रामपाल द्वार, चित्तोरगढ़

उदयपुर के समीप ही १४८५ में कुंभराणा ने कुंभलगढ़ का निर्माण किया। इस बृहत किले की चहारदीवारियाँ उस प्रांत के पहाड़ों से होती हुई जाती हैं।

सात मीटर विशाल इस क़िले के दीवार पर आठ घुड़सवार एक साथ जा सकते हैं। इस क़िले पर बहुत बार आक्रमण हुए। परंतु अकबर एक ही बार इसे अपने अधीन में ले पाया। वह भी थोड़े समय के लिए।

कुँभलगढ़-चहारदीवारी
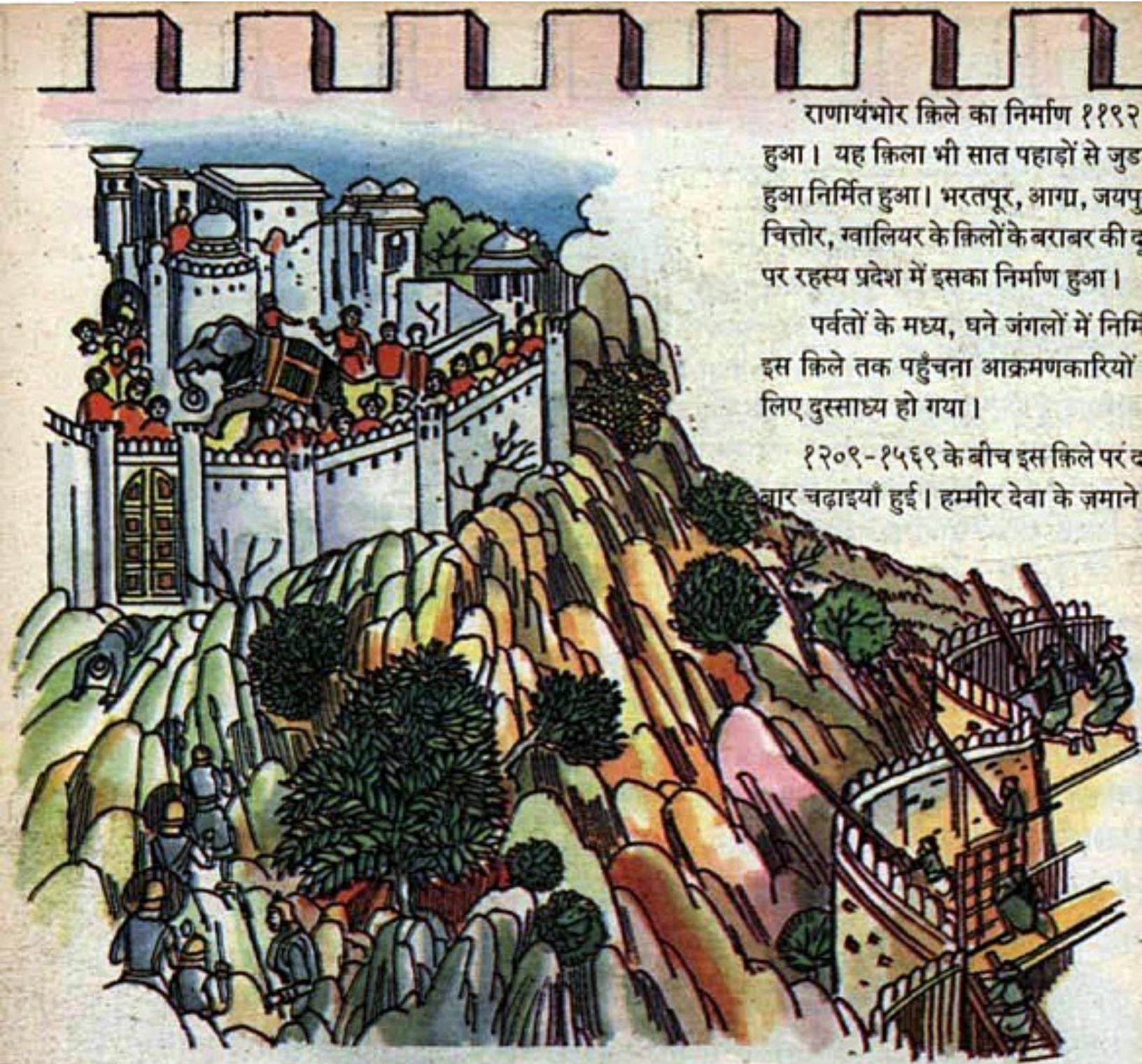
राणाथंभोर क़िले का निर्माण ११९२
हुआ। यह क़िला भी सात पहाड़ों से जुड़
हुआ निर्मित हुआ। भरतपूर, आग्रा, जयपु
चित्तोर, ग्वालियर के क़िलों के बराबर की दू
पर रहस्य प्रदेश में इसका निर्माण हुआ।

पर्वतों के मध्य, घने जंगलों में निर्मि
इस क़िले तक पहुँचना आक्रमणकारियों
लिए दुस्साध्य हो गया।

१२०९-१५६९ के बीच इस क़िले पर द
बार चढ़ाइयाँ हुई। हम्मीर देवा के ज़माने

**राणा थंभोर (बायीं ओर) के बाहर तात्कालिक रूप से खड़े किये गये क़िले से बंदूक चलाते हूए मुगल सैनिक (दायीं ओर)**

अल्लाउद्दीन खिल्जी के एक सेनाधिपति को यहाँ आश्रम दिया गया। उसने खिल्जी के ख़िलाफ़ विद्रोह किया था। तब अल्लाउद्दीन खिल्जी की सेनाओं ने इसे घेर लिया। पर इसपर वे कब्ज़ा नहीं पा सके। वे वहाँ से भाग गये।

१३०१ में दूसरी बार जब इस क़िले पर चढ़ाई हुई, तब अल्लाउद्दीन खिल्जी ने स्वयं इस जिम्मेदारी को अपने हाथ में लिया। तब हम्मीर देवा के दो मंत्रियों ने गद्दारी की। उनके षड्यंत्र के फलस्वरूप क़िले का पतन हुआ।

में हम्मीर की मृत्यु हुई। उसके साहसी और शूर
ाधिपति महम्मद शाह को शत्रुओं ने पकड़ लिया और
मार डाला।

१५६९ में अकबर ने इस क़िले पर धावा बोल दिया। क़िले की दीवारों को तोड़ने के लिए दो सौ बैलों से जुती ड़ियों पर तोपें लायी गयीं। फिर भी क़िला उनके अधीन हुआ। हमला जारी रहा। आख़िर अकबर ने अंबर के ा भगवानदास को, राणाथंभोर राव सूर्जन के साथ ते-वार्ता के लिए भेजा। समझौता हुआ। तब जाकर प्रांत में शांति की स्थापना हो पायी। क़िले के चारों जो जंगल हैं, वह अब बाघों का शरणालय बन गया

मारवार की राजधानी थी मांडोर। पंद्रहवीं शताब्दी ाठौड़ राजा, राव जोधा राजधानी को वहाँ से नौ मील की दूरी पर त पर्वत पर ले जाना चाहता था। अपने नाम पर उसने जोधपुर नगर की स्थापना की। १४५९ में मेहलानगढ़ े का निर्माण किया।

इस प्रांत के अन्य क़िलों की तरह मुगल व अफगानों ने इसपर हमला नहीं किया, बल्कि अड़ोस-पड़ोस के पूत राजा ही हमले करते रहे।

इस क़िले में अब भी किलकिला, शंभुमान, माजीखान नामक अद्भुत तोपें सुरक्षित हैं।
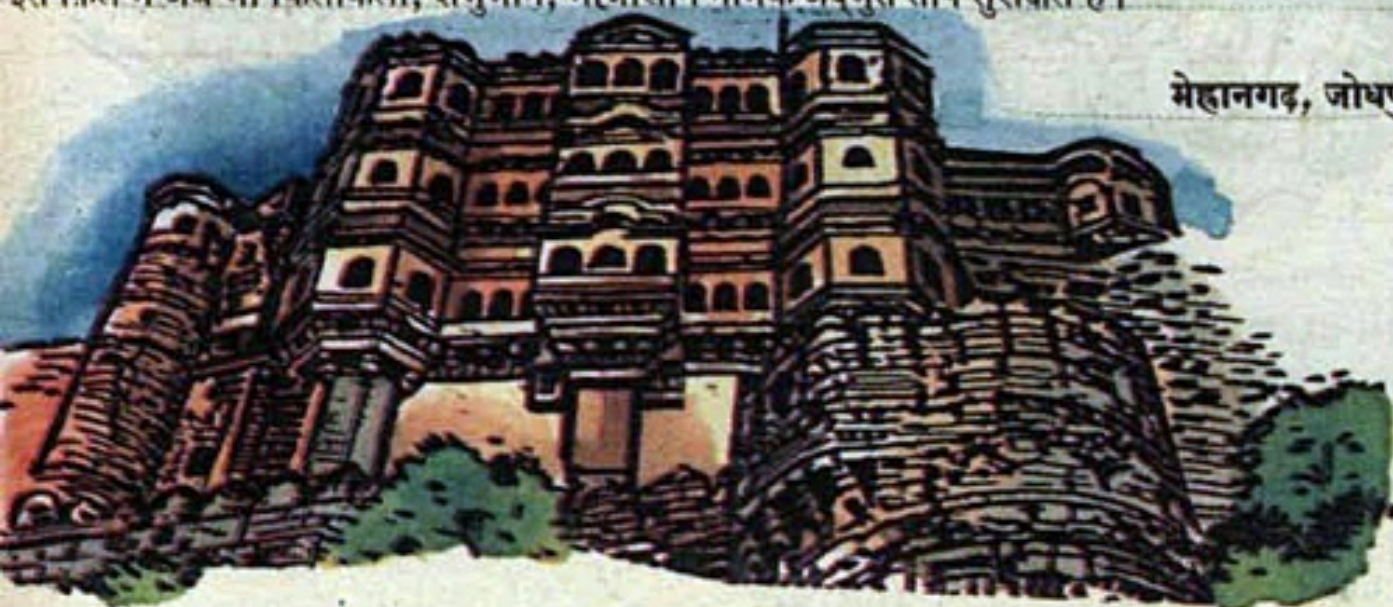
मेहानगढ़, जोधपुर

# सोम की बकवास

सोम की अपनी कोई जायदाद नहीं, लेकिन गाँव में उसके बहुत-से रिश्तेदार थे। इसी का आसरा लेकर वह अपने को बड़ा कहता और अपनी धाक् जमाता। जो मुँह में आता, बक देता था। उसका साला उसे समझाता, पर वह सुनता ही नहीं था। कितना भी समझावो, अपने को सुधारने की कोशिश ही नहीं करता था।

अपने घर के पिछवाड़े में जो कुआँ था, वहाँ एक बार फिसलते - फिसलते वह बच गया। अमरूद पेड़ के सहारे वह अपने को संभाल पाया। पर पाँव में मोच आ गयी। उसकी पत्नी सावित्री ने उसका यह हाल देखा और वह खिल खिलाकर हँस पड़ी।

सोम पत्नी की हँसी देखकर एकदम बौखला उठा "तुमने जन्म लिया उस देश में, जहाँ पतिव्रताएँ पैदा हुई। तुम्हारा नाम भी है एक पतिव्रता का। एक तरफ़ तुम्हारा पति दर्द से कराह रहा है और तुम हँस रही हो? ऐसा जन्म लेने से तो अच्छा यही है किसी कुएँ में जा गिरो और जान दे दो।"

सावित्री उत्तर दिये बिना हँसती हुई वहाँ से चली गयी।

मोच आ जाने के कारण उसे चलने में तक़लीफ़ हो रही थी। किसी तरह वह दरवाज़े तक लंगड़ाता हुआ आया। तब पीछे से आते हुए उसके साले राम ने कहा "क्यों बहनोई जी, कुएँ से दरवाजे तक पहुँचने के लिए इतनी देर लगा दी।"

"तो मतलब यह हुआ कि यहीं खड़े-खड़े तुम भी तमाशा देख रहे थे? थोड़ी मदद तो कर सकते थे ना?" सोम ने कहा।

"तुम्हारा लंगड़ाते हुए जाना, लचक-लचक कर चलना अच्छा लग रहा था। यही देखते हुए मैं तो अपने आपको भूल गया।" रामू ने हँसते हुए कहा।

रामानंद

रहा हूँ?''

''भीख माँगने की ज़रूरत नहीं, इसलिए आप भीख नहीं माँग रहे हैं। अब तो आप लंगड़े हो गये हैं, इसलिए दो-चार घरों में जाकर भीख माँगकर देखिये। आप ही जान जाएँगे कि कितनी तक़लीफ़ होती है'', भिखारी ने कहा। सोम आग-बबूला होता हुआ बोला ''बदमाश कहीं के, किसी गंदे पानी के कुएँ में गिरकर मर''। भिखारी भी हँसता हुआ चला गया।

सोम लंगड़ाता हुआ घर के सामने के चबूतरे पर बैठ गया। वहाँ चार-पाँच नटखट लड़के खेल रहे थे। दिन में कम से कम एक बार ही सही, उनकी गोलियाँ से उसे चोट लगती थी। और सोम उनपर नाराज़ हो उठता था। यह तो हर रोज़ हुआ करता था।

''तुम्हारी अक़्ल टेढ़ी है, इसलिए तुम्हारे विचार भी टेढ़े-मेढ़े हैं। बड़ा हूँ, इसका तुम्हें ध्यान भी नहीं। ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने से तो अच्छा है कि किसी गहरे कुएँ में जाकर कूद मरो '' सोम ने नाराज़ी से कहा।

रामू भी हँसता हुआ वहाँ से चला गया। सोम धीरे-धीरे घर के अंदर आया और गली की तरफ़ का दरवाजा खोला। तब वहाँ लंगड़ाता हुआ एक भिखारी आया और कहने लाग ''लंगड़ा हूँ मालिक, चार पैसे दान मे देना ''।

बड़ी मुश्किल से सोम आगे बढ़ा और कटुता से कहा ''मेरा पैर भी लंगड़ा हो गया है। लेकिन क्या मैं तुम्हारी तरह भीख माँग

उस दिन वे लड़के किसी नयी क़िस्म का खेल खेल रहे थे। ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि एक लड़का आँख बंद करके अंधे की तरह बरताव कर रहा है। दूसरा कान बंद करके बहरे की तरह। तीसरा विचित्र आवाज़े निकालता हुआ गूँगा बना हुआ है। एक और लंगड़े की तरह पाँव उठा-उठाकर चल रहा है। वह कहने लगा ''मैं जानता नहीं कि तुम लोगों के क्या नाम हैं। पर मेरा नाम है सोम।''

बाक़ी सब जोर से हँस पड़े। वह सोम की तरह हूबहू लंगड़ा रहा था। तब अंधे बने

लड़के ने आँखें खोलीं।

सोम से चुप रहा नहीं गया। वह उन्हें गालियाँ देता रहा। लड़के वहाँ से भाग गये।

इतने में वहाँ एक आदमी आया। सोम ने पहले उस आदमी को कभी भी देखा नहीं था। उसके पूछने के पहले ही कि तुम कौन हो, उसने कहा "मैं सीतरामजी के यहाँ नौकरी करने नया-नया आया हूँ। सोमजी से एक बात कहने आया हूँ"।

"मैं ही सोम हूँ। बोलो क्या बात है ?" सोम ने पूछा। "आपके कह देने मात्र से मुझे थोड़े ही एतबार होगा। थोड़ा चलकर दिखाइये। चार लड़के मुझे बताकर गये कि सोमजी लंगड़ाते चलते हैं। हमारे मालिक ने साफ़ बता दिया कि यह ख़बर सोमजी के अलावा किसी और को ना सुनाऊँ।" नौकर ने कहा।

"मैं, और तुम्हें चलकर दिखाऊँ? निकम्मे कहीं के ! सूखे गहरे कुएँ में गिरकर मर" कहकर सोम ने उस नौकर पर गालियों की बौछार कर दी।

जब गालियाँ देना ख़तम हो गया तब नौकर ने कहा "मालिक ने मुझसे बताया भी था कि यों गाली भी इस गाँव में देने की शक्ति आप अकेले ही रखते हैं। अब मुझे विश्वास हो गया कि आप ही सोम हैं। मेरे मालिक ने कहा है कि आप तुरंत उनके नये घर पर आयें।"

चिढ़ते हुए सोम ने पूछा "यह नया घर है कहाँ?" "यहाँ से चार घरों के बाद एक

गली आती है। उस गली में एक कुत्ता है। सोम उसका नाम है। दायीं ओर एक और गली है। वहाँ बैल सोम रहता है। वहाँ एक घर है, जहाँ नीम का एक पेड़ दीखेगा। उसी के बग़ल में एक और गली है। उसमें भैंस सोम रहता है। उस भैंस सोम को जहाँ बाँध रखा है, उसी के सामने यह नया घर है।'' नौकर ने विवरण दिया।

यह सुनते ही सोम अपने आपे से बाहर हो गया। चिल्लाता हुआ बोला ''बंदर की सूरतवाले, चमगीदड़ की आँखवाले, गधे के कानवाले, तेरी इतनी जुर्रत, इतना घमंड। अपने आपको क्या समझ रखा है। जंतुओं के साथ मेरा नाम जोड़ रहे हो? तेरी कितनी हिम्मत'' फिर से गालियों की वर्षा बरसा दी।

जब वर्षा थम गयी, तब नौकर ने कहा ''मैंने कुछ ग़लत नहीं बताया साहब। मैंने जिन-जिनका नाम लिया, उन सबों का एक पाँव लंगड़ा है''। कहकर वह चला गया।

सोम सीताराम का बहुत आदर करता था। इसलिए बड़ी मुश्किल से उसके नये घर पर आया। रास्ते में लंगड़े कुत्ते, लंगड़े बैल और लंगड़े भैंस को देखकर मन ही मन क्रोधित होने लगा।

नये घर में पाँव धरते ही सीताराम ने सोम का स्वागत प्यार से किया। तब सोम ने पूछा ''तुम यहाँ क्यों हो? यह तो नारायण का घर है ना?''

सीताराम ने कहा ''हाँ, घर तो नारायण का ही है। वह कोई दूसरा गाँव गया हुआ है। जाते-जाते उसने घर की चाभी मुझे सौंपी और कहा कि ज़रूरत पड़े तो इसका उपयोग करो। कल ही मेरे चाचा का परिवार आया था। उन्हें यहीं ठहराया। मालूम नहीं क्या बीता, मेरे चाचा की पोती गौरी किसी कारण ड़र गयी और पगली की तरह आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगी। वह हमारी ओर नहीं देखती, हमारी बातें नहीं सुनती। वैद्य का कहना है कि एक बार वह हँस पड़े तो ठीक हो जायेगी। हमने बहुत कोशिशें कीं, लेकिन उसे हँसा नहीं सके। इसी काम पर मैंने तुम्हें यहाँ बुलवाया''।

"तुम लोगों से जो काम नहीं हो पाया, वह काम भला मुझसे कैसे संभव होगा ?" आश्चर्य प्रकट करते हुए सोम ने प्रश्न किया।

"क्यों संभव नहीं होगा? मैंने सुना कि तुम आज लंगड़ा रहे हो। लचक-लचककर लंगड़ा रहे हो। तुम्हारा यह लंगड़ापन देखनेवाले आप ही आप हँसते जा रहे हैं। पूरा गाँव यही कहता है। एक बार मेरे चाचा की पोती के सामने लंगड़ाकर चलना।" सीताराम ने प्रार्थना की।

सीताराम की इन बातों से सोम का आक्रोश और बढ़ गया। उसने सीताराम को जी भरके गालियाँ दीं। फिर भी उसका मन हल्का नहीं हुआ तो उसने गौरी को अपने हाथों में लिया और कहने लगा "क्यों लंगूर मुँहवाली, उँगली भर की नहीं हो। तुम्हें मज़ाक सूझा है? मेरी खिल्ली उड़ाना चाहती हो ? जाकर लंगूरों की भीड़ में क्यों बस नही जाती"। रुके बिना वह गालियाँ देता रहा।

बस, गौरी हँस पड़ी। हँसी के रुकते-रुकते वह साधारण स्थिति में आ गयी। सोम भी परिवर्तित गौरी को देखकर चकित रह गया। चंगी गौरी को साधारण स्थिति में देखकर सब सोम की प्रशंसा करने लगे।

सोम ने कहा "तो बच्ची की बीमारी सच्ची बात है। मैं तो समझता था कि मेरा मज़ाक उड़ाने के लिए आपने मेरे साथ खेल खेला था। अरे, मैं तो पैर में मोच आ जाने के कारण लंगड़ा रहा हूँ और लचक-लचक कर चल रहा हूँ। मेरी यह चाल तुम लोगों के लिए विनोद की चीज़ हो गयी ?"

सीताराम ने हँसकर कहा "तुम्हारी इस हालत से तो हर कोई हमदर्दी दिखायेगा। पर तुम्हारी जो ये गालियाँ हैं, वे तो सबको हँसा देती हैं। गौरी ही की बात लो। वह तुम्हारी गालियाँ सुनकर हँस पड़ी।"

उसकी बकवास दूसरों के विनोद का साधन बन गया, यह जानकर सोम बहुत लज्जित हुआ। उस दिन से शांत रहता आया। उसने गालियाँ देने की आदत छोड़ दी।

# वैद्य का चुनाव

लक्ष्मीपुर का ज़मींदार सूर्यभूपति दयालू और धर्मात्मा था। उसकी ज़मीन फैली हुई थी। अड़ोस-पड़ोस के लगभग सौ गाँवों पर उसी का आधिपत्य था। उन सब गाँवों में से लक्ष्मीपुर सबसे बड़ा गाँव था। सूर्यभूपति के परदादा के पिता ने उस गाँव में एक अस्पताल बनवाया था। सूर्यभूपति के ज़माने तक आसपास के गाँवों के लोग भी वहाँ चिकित्सा के लिए आने लगे थे। लक्ष्मीपुर के अस्पताल में चिकित्सा करनेवाले वैद्य नीलकंठ शास्त्री ही इसके कारक थे। उनकी चिकित्सा-पद्धति बहुत ही उत्तम होती थी। उनकी दवाएँ काफ़ी असरदार होती थीं। वे रोगी की परीक्षा करके आसानी से समझ जाते थे कि रोग क्या है। इसलिए रोग की चिकित्सा बड़ी ही सुगमता से वे कर पाते थे। रोगियों से वे स्नेहपूर्वक पेश आते थे।

ऐसे सुप्रसिद्ध, जन-प्रिय नीलकंठ शास्त्री दिवंगत हुए। जनता और भूपति को भी उनकी मृत्यु पर बहुत ही दुख हुआ। कुछ लोगों ने भूपति को सलाह दी कि उनके प्रधान चार शिष्यों में से किसी एक को मुख्य वैद्य चुना जाए। सूर्यभूपति ने अपने निकटतम मित्र चंद्रवर्मा को यह बात बतायी और कहा "तुम स्वयं इस समस्या का परिष्कार करो। इन चारों में से सुयोग्य को मुख्य वैद्य चुनने की जिम्मेदारी तुम्हीं पर है।"

चंद्रवर्मा ने उससे कहा "भूपति, नीलकंठ शास्त्री के चारों प्रधान शिष्यों को ख़बर भेजो कि वे कल सबेरे ठीक आठ बजे कचहरी आयें। उनमें से जो प्रतिभावान होगा, वही प्रधान वैद्य चुना जायेगा।" साथ ही उसने भूपति को एक और काम भी सौंपा।

सूर्यभूपति ने फ़ौरन मित्र के कहे अनुसार उन चारों वैद्यों को ख़बर भेजी। वे भी इसी ख़बर के इंतज़ार में थे। इसलिए आठ बजे के पहले ही वे कचहरी पहुँच गये।

भगीरथ

वहाँ के नौकरों ने उन्हें सादर बिठाया और कहा "ज़मींदार किसी आवश्यक काम पर लगे हुये हैं। थोड़ी देर तक उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी"।

किन्तु ज़मींदार बहुत देर तक आया ही नहीं। ग्यारह बजने के बाद सूर्यभूपति और चंद्रवर्मा दोनों मिलकर आये। उनके आते ही चारों उठ खड़े हुए और विनयपूर्वक उन्हें प्रणाम किया। दोनों ने चारों को ध्यानपूर्वक देखा और उन्हें बेठने को कहा। सूर्यभूपति के साथ चंद्रवर्मा भी बैठ गया।

दोनों में से कोई भी वैद्य-शास्त्र के बारे में रत्ती भर भी जानता नहीं था। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि परीक्षा कैसे की जाए? इतने में एक नौकर शीशे की एक सुराही ले आया, जिसमें पानी आधा भरा हुआ था। उसने सुराही ज़मींदार के सामने रखी।

नौकर के चले जाते ही चंद्रवर्मा ने कहा "मैं आपसे तीन प्रश्न पूछूँगा। एक-एक करके जवाब दीजियेगा।" जयंत नामक एक युवक को इशारे से अपने पास बुलाया।

जयंत के आते ही चंद्रवर्मा ने शीशे की सुराही दिखाते हुए पूछा "जयंत, इसके बारे में एक वाक्य में कुछ बताना।"

जयंत तो समझता था कि प्रश्न वैद्य-शास्त्र से संबंधित होगा। उसने इस प्रकार के प्रश्न की आशा नहीं की। फिर भी उसने कहा "इस सुराही में आधा पानी है।" चंद्रवर्मा ने अपनी

झल्लाहट को छिपाते हुए उसे एक वृक्ष दिखाया, जिसके पत्ते झड़ चुके थे और वह वृक्ष लगभग शुष्क हो गया था। उसने जयंत से कहा "इस वृक्ष के बारे में भी एक वाक्य में बताना"।

जयंत चिढ़ता हुआ बोला "ऋतुधर्म के अनुसार इस वृक्ष के पत्ते झड़ रहे हैं।"

चंद्रवर्मा ने कहा "अब मेरा तीसरा प्रश्न यह है कि आपको बताना है कि मैंने आपसे ये तीनों सवाल क्यों किये?"

जयंत इस प्रश्न को सुनकर हक्का-बक्का रह गया। उसने अंटसट जवाब तो दिया, जो किसी को भी ठीक तरह से सुनायी नहीं पड़ा।

इसपर चंद्रवर्मा हँस पड़ा और उसे बैठ जाने को कहा। फिर बाक़ी तीनों को बुलाया। नरेंद्र

और मोहन ने भी लगभग जयंत की तरह बरताव किया और उसी की तरह जवाब दिये। हाँ, शब्दों में केवल थोड़ा-बहुत अंतर मात्र था। ललित अंत में आया। उसने कहा "यह सुराही आधी ही भरी हुई है। उसे पूरी तरह से भरना सुलभ है।" उसके उत्तर पर सूर्यभूपति खुश हुआ और अनायास ही उसके मुँह से 'शाबाश' निकल पड़ा।

फिर ललित ने वृक्ष की ओर देखकर कहा "शिशिर ऋतुधर्म के अनुसार इस वृक्ष के पत्ते झड़ रहे हैं। पर जब हेमंत ऋतु का आगमन होगा तब यह अपने को हरे पत्तों से ढक लेगा और शोभायमान दिखायी देगा।" तब चंद्रवर्मा ने उससे कहा "हमारे आखिरी प्रश्न का उत्तर दो और अपने मित्रों को भी यह उत्तर सुनावो।"

ललित ने विनयपूर्वक कहा "वैद्य-शास्त्र में सबसे मुख्य शास्त्र है मनोविज्ञान। जब मनुष्य रोग का शिकार बनता है, तब थोड़ा-बहुत मनोबल खो देता है। वैद्य को चाहिये कि अपनी आशापूरित बातों से उसके मनोबल का पुनरुथ्यान करे। तभी वैद्य की दी हुई दवा अमृत के समान काम करती है और उसे स्वस्थ बनाती है। इस मनोविज्ञान को ही दृष्टि में रखकर आपने इस सुराही तथा वृक्ष के द्वारा हमसे उत्तर जानना चाहा।"

चंद्रवर्मा मुस्कुराता हुआ बोला "ललित, तुमने प्रमाणित किया कि तुम नीलकंठशास्त्री के सुयोग्य शिष्य हो। पर हाँ, एक और बात। जिस वैद्य के पास रोगी आते हैं; उसे रोगियों से मीठी-मीठी बातें करनी होंगी, उनमें हिम्मत बढ़ानी होगी और साथ ही इनसे भी अधिक चाहिये सहनशक्ति।"

ललित भाँप गया कि चंद्रवर्मा ने उसी को दृष्टि में रखकर यह बात कही है। क्योंकि चार घंटों तक प्रतीक्षा करते हुए बाकी तीनों की तरह वह भी झल्ला उठा। अपनी ग़लती महसूस करते हुए उसने कहा "अभ्यास के साथ-साथ सहनशक्ति की भी वृद्धि करूँगा।" चंद्रवर्मा का फ़ैसला ज़मींदार को भी बहुत पसंद आया। उसने मित्र तथा वैद्य ललित की ओर बड़ी तृप्ति से देखा। चंद्रवर्मा ने ललित को प्रधान वैद्य चुना।
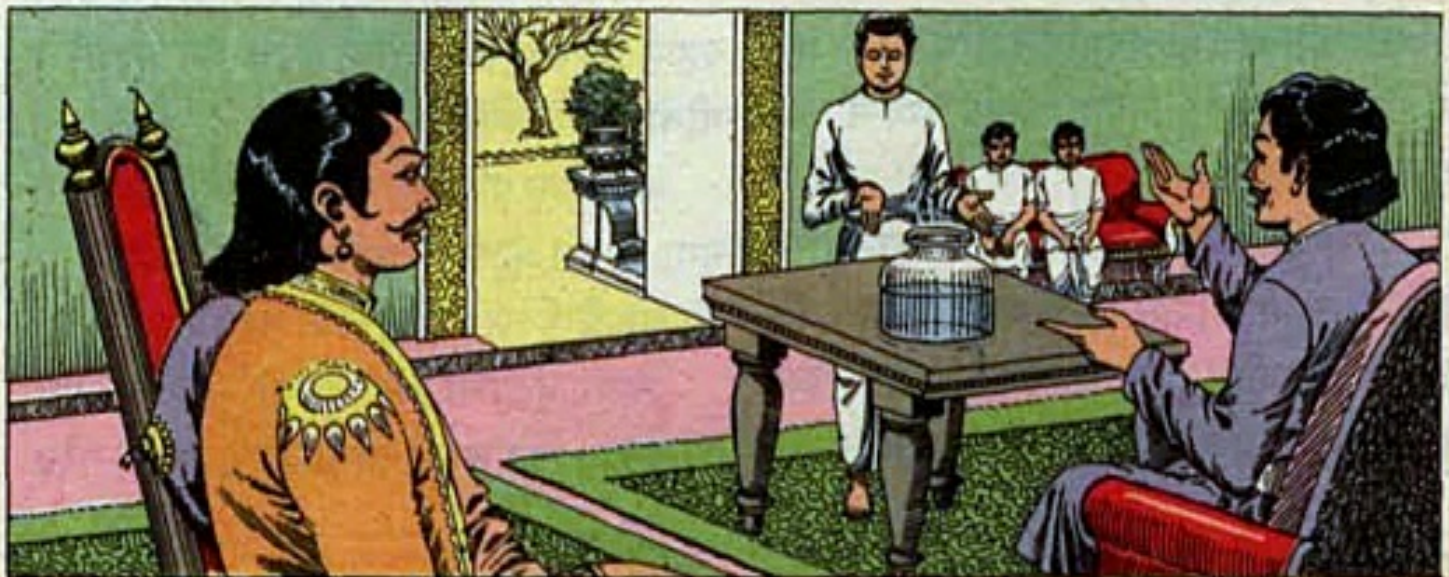
हिडिंबा ने जब भीम से बताया कि मैं तुम्हें चाहती हुँ और तुम्हारी पत्नी बनने की मेरी इच्छा है तब भीम ने उससे बताया "यह कैसे संभव होगा? तुमसे विवाह करने के लिए मैं इन सबकी बलि कैसे चढ़ा सकता हूँ?"

हिडिंबा ने कहा "मैं तुम्हारी माँ और भाइयों को अपने भाई से बचाऊंगी। जो तुम्हारे हैं, वे मेरे भी हैं। उनकी रक्षा करना मेरा धर्म है। तुम सोचते होगे कि मैं क्यों राक्षस-प्रवृत्ति को छोड़कर मानव बन गयी हूँ। यह सब प्रेम का प्रभाव है। मुझे बस, तुम मिल जाओ, यही सब कुछ है। इसके लिए मैं अपने भाई की शतृता भी मोल लेने तैयार हूँ। इन सबको जगाओ"।

"ये शांत सो रहे हैं। इन्हें जगाना मुझे पसंद नहीं। अब रही तुम्हारे भाई की बात। मैं किसी राक्षस से नहीं ड़रता। किसी को भी मार ड़ालने की शक्ति मुझमें है"। आत्मविश्वास-भरे स्वर में भीम ने कहा।

बहुत देर हो गयी, पर बहन हिडिंबा उन मनुष्यों को पकड़कर नहीं आयी। उससे यह सहा नहीं गया, इसलिए हिडिंब पेड़ से उतरा और पाँडवों की तरफ़ बढ़ा। अपने क्रोधित भाई को आते देखकर हिडिंबा ने घबराते हुए भीम से कहा "मेरा भाई यम की तरह इसी तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है। तुम लोगों का यहाँ रहना उचित नहीं। तुम लोगों को आकाश-मार्ग से किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाऊँगी"।

"राक्षसी, ड़रने की कोई बात नहीं। तुम्हारे भाई की मृत्य के क्षण निकट आ गये हैं, इसी लिए वह यहाँ आ रहा है। यही नहीं, इसके

समस्त बंधु-जन भी इकट्ठे होकर यहाँ आयें तो उन सबको यमलोक भेजूँगा। तुम भी देखती जाओ कि मैं यह काम कितनी आसानी से कर सकता हूँ'' भीम ने कहा।

''मुझे तो डर लग रहा है। कितने ही बलवान मनुष्यों को मार डाला है मेरे भाई ने। मैं अपनी आँखों यह देख भी चुकी हुँ। इसीलिए मैं तुम्हें सावधान कर रही हुँ। फिर तुम्हारी इच्छा'' हिडिंबा ने अपना भय व्यक्त किया।

हिडिंब समीप आ गया। बनी ठनी , अच्छे वस्त्रों में सजी अपनी बहन को देखकर उसने मन ही मन सोचा ''लगता है, इसको प्रेम-रोग हो गया है।'' आँख लाल करते हुए विकृत हँसी हँसते हुए उसने हिडिंबा से कहा ''अरी ओ हिडिंबा, मैं भूख से मरा जा रहा हुं और तुम? लगता है कि किसी को अपने मोह-पाश में जकडने के प्रयत्न में मग्न हो। हमारे राक्षस वंश की मर्यादाओं को ठुकराकर, भुलाकर मनुष्यों से संबंध जोड़ना चाहती हो? मेरे ही विरुद्ध विद्रोह करने तुल गयी हो? इन्हें मारकर तुम्हारा भी वध करूँगा''। कहते हुए वह भीम की ओर मुड़ा।

भीम ने कहा ''ऐ अधम राक्षस, तुम्हें मारकर इस अरण्य की पीड़ा भी दूर करूँगा''।

हाथ फैलाता हुआ हिडिंब भीम के निकट आया। भीम ने बड़ी ही फुर्ती और होशियारी से उसे पकड़ लिया और दूर तक खींचता हुआ ले गया। इतने में हिडिंब ने भी अपने को भीम से छुड़ाया। उसने कसकर गले लगाया और ज़ोर से चिल्ला उठा।

उसकी चिल्लाहट से माँ और भाई कहीं जाग ना जाएँ, इसलिए भीम ने उसके आलिंगन से अपने को छुड़ा लिया और दूर तक उसे खींचकर ले गया। हिडिंब जान गया कि भीम कोई साधारण मनुष्य नहीं है। बहुत ही बलिष्ठ तथा हट्टा-कट्टा है। उसने अपने बल को भी द्विगुणीकृत किया और उससे भिड़ पड़ा।

दोनों ने जब युद्ध करना प्रारंभ कर दिया तब भूमि काँप उठी। पेड़-पौधे, लताएँ टूटकर गिर पड़ीं। कुन्ती और शेष पाँडव जाग उठे। सजी, श्रंगार की मूर्ति-सी दीखने वाली समीप ही खडी हिडिंबा को देखकर कुन्ती ने धीरे से पूछा ''कन्ये,

तुम्हें देखते हुए लगता है कि तुम कोई अप्सरा हो। तुम कौन हो? कहाँ जाने निकली और यहाँ कैसे आ गयी? अपने बारे में स्पष्ट बताना''।

हिडिंबा ने सच-सच बता दिया। उसने कहा ''माते, मैं और मेरा राक्षस भाई हिडिंब इसी अरण्य के निवासी हैं। मेरा भाई आप सबको खा जाना चाहता था। आपको ले आने उसने मुझे यहाँ भेजा था। लेकिन आपके पुत्र की सुन्दरता पर मैं मुग्ध हो गयी। इसलिए मैं ने अपने भाई की आज्ञा का पालन नहीं किया। मैंने अपने मन की बात आपके पुत्र को भी बता दीया। इतने में मेरा भाई आ गया। आपका पुत्र उसे खींचकर दूर तक ले गया। अब दोनों में घमासान युद्ध हो रहा है। मेरा भाई बहुत बड़ा बलवान है। उसने कितने ही बड़े-बड़े हृष्ट-पुष्ट बलवानों को मौत के घाट उतारा है। मैंने आपके पुत्र से प्रार्थना भी की कि उससे लड़ना मत। आप सब को बचाने का वादा भी मैंने किया था। किन्तु उसने मेरी एक ना मानी।''

हिडिंबा की बातें सुनकर धर्मराज, अर्जुन, नकुल, सहदेव उठ गये और युद्ध-स्थल से थोड़ी दूर पर रुककर देखने लगे। दोनों दो सिंहों की तरह गरज रहे थे और लड़ रहे थे। धूलि से वे लथपथ थे। अर्जुन ने देखा कि हिडिंब ही युद्ध में अधिक सफल होता दीख रहा है तो उसने कहा ''भीमसेन, अगर तुम थक गये हो तो थोड़ी देर इससे मैं युद्ध करूँगा''।

''अर्जुन, तुम ज़ल्दबाज़ी मत करो। इस भुलावे में मत रहो कि यह मुझे झुकायेगा। एक बार जब यह मेरी पकड़ में आ जाए तो मुझसे

बचकर कहाँ जायेगा?'' भीमसेन ने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

''तब तो इसका अंत शीघ्र कर देना। हमारा यहाँ अधिक समय तक रहना उचित नहीं। सूर्योदय भी होनेवाला है। संध्या होते-होते राक्षसों के बल में वृद्धि होती है। इससे खेलते हुए समय व्यर्थ ना करना। आवश्यकता पड़े तो अपने बाणों से इसके सिर को धड़ से अलग कर दूँगा'' अर्जुन ने कहा।

अर्जुन की बातों से भीम में आवेश अधिक हो गया। उसने हिडिंब को पकड़कर खूब घुमाया और और नीचे पटक दिया। उसकी कमर तोड़ दी और उसके शरीर के एक -एक अंग को पीड़ा पहुँचाने लगा। ज़ोर से हाहाकार करता हुआ हिडिंब ने अपने प्राण छोड़े।

कुन्ती और भाइयों ने भीम का अभिनंदन किया। अर्जुन ने उसकी भरपूर प्रशंसा की और कहा ''समीप ही कोई गाँव दीख रहा है। अच्छा यही होगा कि हम वहाँ अविलंब पहुँच जाएँ। दुर्योधन के गुप्तचरों को हमारे बारे में कुछ भी मालूम होना नहीं चाहिये।''

कुन्ती के साथ-साथ सब तेज़ी से वहाँ से निकल पड़े। हिडिंबा भी उनके साथ-साथ आने लगी। तब भीम ने कहा ''हिडिंबा, इस मोहिनी के रूप में ही रहकर क्यों हमारे साथ-साथ आ रही हो? चली जाओ। नहीं तो तुम्हारे भाई की तरह तुम्हें भी मृत्यु-लोक पहुँचा दूँगा''।

धर्मराज ने भीम के इस कड़वे रुख को देखकर कहा ''भीम, कैसी बातें कर रहे हो? एक स्त्री को मारने की धमकी दे रहे हो? अगर यह हम पर क्रोधित भी है तो होने दे। यह हमारा क्या बिगाड़ सकती है। हिडिंब को मारकर तुमने अच्छा किया। यह उसकी बहन है; इसलिए इसे भी मार डालोगे? ऐसा करना अनुचित है''।

हिडिंबा ने धर्मराज और कुन्ती के पाँव छुये और कहा ''राक्षस-धर्म व प्रकृति का त्याग करके बड़ी आशा लिए मैंने इन्हें चाहा है। स्त्री-सहज स्वभाव को मैंने अपनाया है। आज तक मैंने किसी को चाहा ही नहीं। चाहा तो केवल भीम को। अगर ये मेरे प्रेम को ठुकराएँगे, मेरा तिरस्कार करेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। मेरी रक्षा कीजिये और अपना धर्म निभाइये।

कि जब तक वह माँ नहीं बनेगी, तब तक वह उसका पति बनकर रहेगा। हिडिंबा भीम को लेकर आकाश-मार्ग में उड़कर चली गयी। दोनों ने पर्वतों के शिखरों पर, पहाड़ी गुफ़ाओं में, नदी-तटों पर तथा सुन्दर झुरमुटों में आनंदमय जीवन बिताया। अपनी ऐहिक इच्छाओं की पूर्ति की। कालक्रमानुसार हिडिंबा गर्भवती हुई। एक पुत्र को जन्म दिया। पैदा होते ही वह बड़ा हो गया और माता-पिता को प्रणाम करता हुआ उठ खड़ा हो गया। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था। उसका सर एक मटके की तरह साफ़ था। हिडिंबा को इसपर बहुत आश्चर्य हुआ। इसलिए उसका नाम रखा गया घटोत्कच। (उत्कच घट) अर्थात केशरहित मटका।

आप पर कोई विपदा आनेवाली हो तो सूचित कीजिये। पल भर में आपको अरण्यों के उस पार पहुँचाऊँगी।''

धर्मराज ने हिडिंबा से कहा ''मैंने तुम्हारी बातों का विश्वास किया। भीम तुम्हें स्वीकार करेगा। दिन भर स्वेच्छा से दोनों विचरो, किन्तु रात को इसे हमारे स्थान पर पहुँचा दो।''

कुन्ती ने भीम से कहा ''पुत्र, धर्मराज की बात मान लो। हिडिंबा यद्यपि राक्षसी है, पर है स्त्री। स्त्री जब किसी को चाहती है, तब चाहनेवाले पर वह सब कुछ लुटाती है। अपना सर्वस्व समर्पित करती है। हिडिंबा की बातों में सच्चाई हैं और आत्म-समर्पण की भावना स्पष्ट दीखती है। इसे अपनाकर सुख से रहो।'' भीम ने भी मान लिया

घटोत्कच ने अपने माता-पिता के सम्मुख घुटने टेके और कहा ''मुझसे अगर काम पड़े तो मेरा स्मरण कीजिये। तक्षण ही मैं आपके सामने प्रस्तुत हो जाऊँगा।'' कहकर वह उत्तर की ओर निकल पड़ा। हिडिंबा भी निर्धारित नियमों के अनुसार भीमसेन से अनुमति लेकर चली गयी।

पाँडवों ने वल्कल वस्त्र पहने। ब्राह्मण कुमारों के वेष में त्रिगर्त, पाँचाल तथा कीचक देशों में भ्रमण करते हुए बहुत दूर चले गये।

जब वे देशों में से होते हुए यात्रा कर रहे थे, तब उन्हें एक जगह पर व्यास मिले। सबने उन्हें सविनय प्रणाम किया। दीन वदन लिये वे उनके सामने खड़े हो गये। उन्होंने कहा ''तुम और

कौरव दोनों मेरी दृष्टि में समान हो। किन्तु उन लोगों ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। इस छोटी-सी उम्र में तुम लोगों को इस दुस्थिति में देखकर बड़ी दया आ रही है। तुम लोग इन कष्टों से दुखी न होना। यहाँ से पास ही एकचक्रपुर है। वह सुन्दर तथा स्वस्थ प्रदेश है। अपनी असलियत को छिपाकर कुछ समय तक तुम लोग यहीं रहो। किसी को मालूम ना हो कि तुम लोग पांडव हो''।

व्यास उन्हें स्वयं एकचक्रपुर ले गया। एक ब्राह्मण के घर में उनके निवास का प्रबंध किया। कुन्ती से कहा ''देवी, आप लोग एक महीना यहीं रहिये। मैं पुनः आकर आपसे मिलूँगा''। कहकर वे वहाँ से चले गये। कुन्ती देवी और पांडव उसी ब्राह्मण के घर में रहकर दिन गुज़ारने लगे। सबसे मिल - जुलकर रहते और भिक्षा से जो प्राप्त होता था, अपना जीवन- यापन करते। पाँचों के लाये हुए भोजन पदार्थों को दो भागों में कुन्ती बाँटती- एक भाग भीम को खिलाती और दूसरा भाग पाँचों खाते थे। इसी भाग में से कुछ अतिथियों को भी खिलाती थीं। पांडव भिक्षा माँगते थे और अपना पेट भरते थे। साथ-साथ वेदाध्ययन भी करते थे। यों सुखपूर्वक जीवन बिता रहे थे।

एक दिन धर्मराज, अर्जुन, नकुल, सहदेव भिक्षा माँगने नगर में गये। केवल भीमसेन और कुन्ती ही घर में थे। उस समय ब्राह्मण के घर से रोने की आवाज़ सुनायी पड़ी। कुन्ती ने भीम से कहा ''लगता है कि घरवालों पर कोई आपदा आ पड़ी है। यहाँ रहने की जगह देकर हमपर उन्होंने बड़ा उपकार किया है। हम भी बहुत समय से यहाँ रह रहे हैं। यह जानना हमारा कर्तव्य है कि उनपर कैसी विपदा आ पड़ी। वे क्यों दुखी हैं? हमसे जो हो पायेगा, हम करेंगे। पहले मैं जानकारी प्राप्त करके लौटूँगी कि आखिर हुआ क्या है?'' यों कहकर कुन्ती घर के उस भाग में गयी, जहाँ ब्राह्मण परिवार रह रहा था।

वहाँ जाकर कुन्ती ने देखा कि पत्नी, पुत्री तथा पुत्र को पास बिठाकर ब्राह्मण रो रहा था। वह उनके पास जाकर बैठ गयी। जानने को आतुर थी कि वे क्यों यों रोये जा रहे हैं।

(सशेष)

# सही उम्र

कोदंड एक गाँव का किसान था। उसे एक चरवाहे की ज़रूरत आ पड़ी। उसने गाँव के दलाल दशरथ को बुलाया और उससे कहा "गर्मी और बारिश में गाँव से दूर खेतों में पशुओं को चराने ले जाना होगा, इसलिए बीस साल के अंदर के चरवाहे का इंतज़ाम करना"।

दशरथ को कोदंड ने दस रुपयों की पेशगी दी। उसने रुपये लेकर कहा "हाँ, हाँ, मैं समझ गया। एक चुस्त लड़के को पकड़कर ले आऊंगा, जो पंद्रह और सत्रह साल के बीच की उम्र का हो और आपके पशुओं की अच्छी तरह देखभाल करे।"

दूसरे दिन एक आदमी कोदंड के पास आया। उसने प्रणाम करते हुए कहा "मालिक मेरा नाम पीलू है। दशरथजी ने मुझे आपसे मिलने का कहा था।"

कोदंड ने उसे सिर से पैर तक देखकर कहा "मैंने तो दशरथ से कहा था कि एक लड़का भेजो, जिसकी उम्र बीस से ज़्यादा ना हो। तुम तो पच्चीस साल के लग रहे हो। खेतों में और पेडों के बीच में से भागनेवाले उन पशुओं को अपने नियंत्रण में कैसे रख पाओगे? यह काम तुमसे नहीं होगा। यह काम तुमसे नहीं हो पायेगा"।

पीलू ने कहा "ऐसा मत कहिए। थोड़ा दुबला - पतला हूँ, इसलिए मेरी उम्र ज़्यादा लग रही होगी। मेरी तो उम्र सत्रह साल ही है।"

कोदंड एक क्षण भर सोचता रहा और फिर कहा "सामने की उस झोंपड़ी में जाकर रहो। सावधान रहना। झोंपड़ी में नमक के बोरे हैं। कहीं चूहें पूरा नमक खा ना जाएं"।

पीलू चकित हो बोला "ऐसा कैसे होगा मालिक। चूहे नमक खाते हैं, यह तो अपने तीस साल के जीवन-काल में पहली बार सुन रहा हूँ"।

\- प्रभाकर नायक

# महुआ पेड़

सब जानते हैं रीछ को शहद बहुत पसंद है। उत्तर भारत के रीछ महुआ के फूलों को बड़े चाव से खाते हैं। कभी-कभी वे ज़्यादा खा जाते हैं। नशे में शराबी की तरह झूमने लगते हैं। उत्तर भारत के जंगलों में महुआ पेड़ बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। अरण्य-प्रांतों के अदिमवासियों को जब चावल नहीं मिलता, तब महुआ के फूलों को वे खाते हैं और अपना पेट भरते हैं। शाम को वे पेड़ के नीचे की जमीन साफ़ करते हैं। रात को फूल खिलते हैं और सबेरे-सबेरे झड़ जाते हैं। इनका रंग पीला होता है। वे इन फूलों को इकट्ठा करते हैं और उन्हें सुखाते हैं; सुरक्षित रखते हैं। जब जरूरत पड़ी, खाते हैं। इन फूलों को कच्चा ही या उबालकर खाते हैं। कहा जाता है कि आदिम जाति के अत्याचारी व्यक्तियों को सताने और दंड देने के लिए कुछ मराठा शासक वहाँ के महुआ पेड़ों को कटवाया करते थे।

महुआ पेड़ को संस्कृत में मधूक, गुजराती में महूदा, तमिल में इलुप्पै, मलयालम में इलुप, तेलुगु में इप्पा और अंग्रेजी में 'इंडियन बट्टर' कहते हैं। बहुत ही गंभीर दीखनेवाले इस महुआ पेड़ की ऊँचाई होती है २० मीटर। पेड़ के अंत में गोल आकार में घने कोमल पत्ते होते हैं। फूल भी डालियों के आख़िरी भाग में ही फूलते हैं। गूदे से भरे अंडे के आकार के इसके फल हरे रंग के होते हैं। यद्यपि इसकी लकड़ी मज़बूत है, फिर भी इसे काटा नहीं जाता, क्योंकि इसके फूल और फल उपयोगी व मूल्यवान हैं। महुवे के बीजों से तेल निकाला जाता है। इस तेल से साबुन और औषधियाँ बनाते हैं। महुआ के फूल, पेड़ से बहती हुई गोंद, छिलका आदि औषधियों को बनाने के काम में लाये जाते है।

हमारे देश के ऋषि : २

# विश्वामित्र

विश्वामित्र ने राज्य का परित्याग किया, तपस्या में मग्न हो गये, फिर भी वसिष्ठ के प्रति उनमें ईर्ष्या और द्वेष भरे हुए थे। उनपर वे विजय पा नहीं सके। वसिष्ठ के बारे में पढ़ते हुए हमने यह बात जानी। शनैःशनैः विश्वामित्र ने अपनी इस बलहीनता पर विजय पायी। वसिष्ठ ने उन्हें ब्रह्मर्षि कहकर संबोधित किया।

राजकुमार सत्यव्रत बुरी आदतों का शिकार हो गया। बुरे से बुरे व्यसनों ने उसे भ्रष्ट कर दिया। उसके पिता अपने पुत्र के पतन से बहुत ही क्रोधित हुए और उसे राज्य से निकाल दिया। वह जंगल चला गया। उसी जंगल में विश्वामित्र पत्नी और संतान सहित तपस्या कर रहे थे। एक बार जब विश्वामित्र उपस्थित नहीं थे तब वहाँ भारी अकाल पड़ा। उस समय सत्यव्रत ने विश्वामित्र की पत्नी और बच्चों को खाना खिलाया और उन्हें जीवित रखा। एक दिन सत्यव्रत को खाने को कुछ नहीं मिला तो उसने वसिष्ठ आश्रम के एक जंतु को मार डाला। उसका थोड़ा-सा मांस स्वयं खाया और बाक़ी विश्वामित्र के परिवार को दिया। विषय जानकर वसिष्ठ बहुत ही क्रोधित हुए और उन्होने सत्यव्रत को शाप दिया।

जब विश्वामित्र आश्रम लौटे तब अपने परिवार के लिए सत्यव्रत के किये गये उपकार से अवगत हुए। उन्हें बहुत आनंद हुआ। उन्होंने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। यों दिन-ब-दिन सत्यव्रत के प्रति उनकी आदर-भावना बढने लगी।

सत्यव्रत को क्षमा करके उसके पिता ने कुछ समय बाद उसे वापस बुला लिया। पिता की मृत्यु के बाद सत्यव्रत राजा बना। सत्यव्रत में सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा जगी। अपने कुलगुरु वसिष्ठ से उसने प्रार्थना की कि इसके लिए आवश्यक यज्ञ करवाइये। किन्तु वसिष्ठ ने स्पष्ट कह दिया कि ऐसा कोई यज्ञ है ही नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि सशरीर स्वर्ग जाना असाध्य है। किन्तु सत्यव्रत ने अपने गुरु की बात नहीं मानी। दोनों में संघर्ष इस हद तक हुआ कि आख़िर वसिष्ठ ने क्रोधित हो उसे शाप दिया कि तुम त्रिशंकु हो जाओगे। 'त्रिशंकु' वह है, जिससे तीन पाप हुए हों।

त्रिशंकु विश्वामित्र की शरण में गया। अपनी इच्छा व्यक्त की। विश्वामित्र प्रमाणित करना चाहते थे कि वे स्वयं वसिष्ठ से कहीं महान हैं। उन्हें लगा कि इससे अच्छा अवकाश नहीं मिलेगा। उन्होंने तक्षण ही बड़े उत्साह से यज्ञ प्रारंभ किया। उस यज्ञ के प्रभाव से स्वर्ग के मुख्य द्वार तक त्रिशंकु जा पाया। पर देवताओं ने उसे वहीं रोका और उसे नीचे ढकेल दिया। भूमि पर गिरते-गिरते उसने विश्वामित्र को पुकारा। विश्वामित्र ने ज़ोर से चिल्लाया कि वहीं रुक जाओ। त्रिशंकु आकाश में ही उल्टे लटकने लगा। विश्वामित्र ने अपने तपोबल के बल पर एक नूतन स्वर्ग की सृष्टि की। उसीका नाम पड़ा त्रिशंकु स्वर्ग। इससे हमें ज्ञात होता है तपोशक्ति से कुछ भी साधा जा सकता है। विश्वामित्र इतने महान थे कि अपने तपोबल से उन्होंने सृष्टि की प्रतिसृष्टि की।

विश्वामित्र के तप को तोड़ने के लिए इंद्र ने एक

बार अप्सरा मेनका को भेजा। उसे देखकर विश्वामित्र का मन डाँवाडोल हो गया। मेनका की सुन्दरता पर वे मुग्ध हो गये। उसे अपनी पत्नी बनाया और कुछ समय तक ग्राहस्थ्य जीवन भी बिताया। उन्हें एक शिशु जन्मी। उसी बालिका का नाम है शकुंतला। बड़ी होने के बाद दुष्यंत से उसका विवाह हुआ। उसने भरत को जन्म दिया। कहते हैं कि भरत के ही नाम पर हमारे देश का नाम पड़ा - भारत।

हरिश्चंद्र ने अपने जीवन-काल में नाना प्रकार की यातनाएँ सहीं, अनगिनत कष्टों का सामना किया। किन्तु उसकी प्रतिष्ठा दसों दशाओं में व्याप्त हुई। सत्य व वचन - बद्धता के लिए आज भी उन्हीं का नाम लिया जाता है। एक प्रकार से विश्वामित्र ही इसके कारक हैं। हरिश्चंद्र अपने वचन का पक्का था। किसी भी स्थिति में अपने वचन से नही मुकरता था। वसिष्ठ ने देवलोक में इसका दावा किया तो विश्वामित्र ने वसिष्ठ का विरोध किया और कहा ''वह भी एक मानव मात्र है। उसी के मुँह से मैं असत्य कहलवाऊँगा''। यों उन्होंने वसिष्ठ को चुनौती दी। एक निश्चित योजना बनाकर वे हरिश्चंद्र के पास गये और उसके राज्य को हस्तगत किया। इतना करने के बाद भी विश्वामित्र ने उससे कहा कि तुम मेरे ऋणी हो। ऋण वसूल करने के लिए उसके साथ अपने एक शिष्य को भी भेजा और घोर कष्ट पहुँचाये। वचनबद्ध हरिश्चंद्र ने अपना वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ खो दिया। काशी में अपने पुत्र और पत्नी को एक ब्राह्मण को बेच दिया। वह स्वयं श्मशान की देख -रेख में लग गया तब भी उसने अपनी पत्नी से अपने पुत्र के शव को जलाने के लिए शुल्क माँगा। उसके सत्यव्रत से देवता प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष हुए। उन्होंने उसका राज्य लौटाया और पुत्र-पत्नी को उसे सौंपा।

हरिश्चंद्र के सत्यव्रत से तीनों लोक अवगत हुए। उसकी कीर्ति चिरस्थायी रही। इसके कारक थें विश्वामित्र।

# क्या तुम जानते हो?

१. हमारे देश में वे प्रांत कौन-से हैं, जो 'सात बहनें कहकर पुकारे जाते हैं ?

२. डैनमा का आविष्कार किसने किया?

३. सुनील गवास्कर ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट से कब से विराम लिया?

४. अफ्रीका खंड में सबसे बड़ा नगर कौन-सा है?

५. तुलुभाषा हमारे देश के किस प्रांत में अधिक बोली जाती है?

६. ''समूरै'' वर्ग के प्रसिद्ध साहसी सैनिक किस देश के हैं?

७. हमारे देश में प्रकाशित अति प्राचीन समाचार-पत्र कौन-सा है?

८. संसार में सबसे बड़ा घंटा कौन-सा है?

९. मौर्यवंश के संस्थापक कौन थे ?

१०. 'टुनिशिया' का पुराना नाम क्या है?

११. अहमदाबाद किस नदी तट पर है?

१२. कहा जाता है कि श्रीराम ने लंका पहुँचने के लिए एक सेतु का निर्माण किया था। उस सेतु का वर्तमान नाम क्या है?

१३. संसार का सबसे बड़ा 'खाडी' कौन-सा है ?

१४. उत्कल देश के नाम से प्रख्यात देश का वर्तमान नाम क्या है ?

१५. 'टेस्ट माच' में भाग लेनेवाले प्रथम भारतीय कौन हैं?

१६. टेलिविज़न का आविष्कार किसने किया?

## उत्तर

१. अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपूर, मेघालय, मिजोरं, नागालाण्ड, त्रिपुरा

२. मैकेल प्यारडे

३. १९८७ नवंबर

४. ईजप्ट की राजधानी कैरो

५. दक्षिण कर्नाटक

६. जापान

७. बाम्बे समाचार

८. मास्को का 'दि ग्रेट बेल'

९. चंद्रगुप्त मौर्य

१०. कार्तेज

११. सबरमति

१२. आडम्स ब्रिड्ज

१३. बंगाली खाड़ी

१४. ओरिस्सा

१५. के.एस. रणजीतसिंग

१६. जान लागी बायिर्ड

# सुप्रतीक के तीन प्रश्न

रत्नगिरि का राजा सत्याकर साहित्य-प्रिय था। अपने आस्थान में उसने कितने ही पंडितों को समुचित स्थान दिया। उन्हें आश्रय दिया और उनके पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लिया। जहाँ कहीं भी प्रतिभावान दिखायी पड़ा, उसका आदर किया।

एक बार उसने अपने आस्थान में सर्वकला सम्मेलन का आयोजन किया। उस समय साहित्य से संबंधित कितने ही वाद-विवाद हुए। तर्क-वितर्क हुए। अपने-अपने पांडित्य का प्रदर्शन पंडितों ने किया। इस साहित्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए देश-विदेशों से बहुत ही साहित्य-कोनिद उपस्थित हुए। आस्थान के पंडितों ने बाहर से आये पंडितों को बहुत बुरी तरह से हराया। उन्होंने प्रमाणित किया कि राजा सत्याकर के आस्थान के पंडित अन्य पंडितों से श्रेष्ठ हैं। उनसे टक्कर लेनेवाला कोई है नहीं। अपने कवि और पंडितों की प्रतिभा पर राजा अति प्रसन्न हुआ।

राजा सत्याकर ने अपने पंडितों के विजय-चिन्ह के रूप में उत्तम शिल्पियों से बहुत ही सुन्दर रूप से पाँच धातुओं से एक घंटा बनवाया। वह आस्थान में लटकाया गया। उसने अपने घोषणा-पत्र में बताया कि यह घंटा उसके आस्थान की प्रतिष्ठा का प्रतीक है। जो आस्थान के पंडितों को हरायेगा, उसे यह घंटा पुरस्कार के रूप में दिया जायेगा। साथ-साथ लाख अशर्फ़ियाँ भी दी जायेंगी और विजेता पंडित का सम्मान होगा। इस पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए महापंडित आये, किन्तु आस्थान के पंडितों को हराने में असफल हुए। कंकण नामक पंडित को यह समाचार मालूम हुआ। वह बहुभाषावेत्ता तथा उत्तम कोटि का बुद्धिमान था। उसे अपने पांडित्य का गर्व भी था। उसे विश्वास था कि मैं सत्याकर के आस्थान के पंडितों को आसानी से हरा पाऊँगा।

विनायक जोशी

कंकण और आस्थान के पंडितों के बीच दो दिनों तक वाद विवाद हुए, चर्चाएँ हुईं। लेकिन हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो पाया। तीसरे दिन कंकण के जीतने के लक्षण दिखायी पड़े। राजधानी की जनता निर्णय सुनने को बहुत ही आतुर थी। लोग परस्पर इसी स्पर्धा की बातें करने लगे। चौथे दिन कंकण की विजय की घोषणा हुई। आस्थान के पंडितों ने अपना पराजय स्वीकार किया। राजा इस पराजय से बहुत ही लज्जित हुआ। वचन के अनुसार राजा ने घंटा उसे समर्पित किया और बड़े वैभव के साथ कंकण का स्वागत-सत्कार किया। लाख अशर्फ़ियाँ भी उसे दी गयीं।

विजयगर्व से पालकी में बैठकर जब रत्नगिरि की सरहदों को पार करने ही वाला था, तब एक चरवाहे ने उसे रोका। वह कंकण से नाराज़ था। कलाओं के प्रति उसे अपार आदर था। आस्थान के पंडितों का वह गौरव करता था। उनकी पराजय ने उसे निराश कर दिया।

वह कंकण के सामने आया और कहा "महोदय, जनता को अपनी संतान समान माननेवालों में से हैं हमारे राजा सत्याकर। वे हमारे लिए भगवान समान हैं। उनके लिए आस्थान की प्रतिष्ठा साँस के समान मूल्यवान है। इस प्रतिष्ठा का चिन्ह है, यह घंटा। यह घंटा हमारी सरहदों को पार करके ले जाया ना जाए, क्या इसका प्रयत्न मैं कर सकता हूँ?"

कंकण ने उसे नख-शिख पर्यंत देखा और सिर हिलाते हुए हँस पड़ा। इस हँसी ने चरवाहे सुप्रतीक को और क्रोधित किया। उसने तीव्र

स्वर में कहा ''यों हंसिये मत। मैं जानता हूँ, आप महापंडित हैं और मैं अनपढ़ हूं। थोड़ा-बहुत जो मेरा लोकज्ञान है, उसके आधार पर आपसे मैं तीन प्रश्न पूछूँगा। इन तीनों प्रश्नों का सही उत्तर आपको देना होगा। किसी भी प्रश्न का आप अगर उत्तर दे नहीं पायेंगे तो यह घंटा आपको यहीं छोड़ना पड़ेगा। लाख अशर्फ़ियाँ भी आपको वापस देनी होंगी। अगर आप किसी भी प्रश्न का सही उत्तर नहीं दे पाये तो आप पालकी से उतरेंगे और घंटा स्वयं राजा को लौटायेंगे। यह शर्त क्या आपको मंज़ूर है ?'' कंकण ने बड़ी लापरवाही से उसे देखकर कहा ''पूछो''।

''मेरा पहला प्रश्न यों है - जानने पर ही बताया जा सकता है, बताने पर ही जाना जा सकता है, सोचने पर ही जाना जा सकता है। वह क्या है?'' सुप्रतीक ने पूछा।

कंकण ने ज़ोर से हँसते हुए कहा ''एक मनुष्य का नाम।'' ''नहीं। वह है पहेली। एक मनुष्य का क्या नाम है , यह स्वयं उसके बताने पर ही मालूम हो सकता है, सोचने पर नहीं। अगर वह पहेली हो तो थोड़ी देर तर्क की कसौटी पर कसकर सोचने पर उत्तर जाना जा सकता है''। प्रतीक ने कहा।

कंकण का चेहरा फीका पड़ गया, विवर्ण हो गया।

''मेरा दूसरा प्रश्न। एक पेड़। पेड़ की दो टहनियाँ। एक-एक टहनी पर पाँच-पाँच बैठे हुए हैं। पाँचों के गले क़ाटे गये, पर लहू की एक बूँद भी नहीं गिरी, एक की भी जान नहीं गयी।

वह क्या है?'' सुप्रतीक ने पूछा।

कंकण बहुत देर तक सोचता रहा। वेदांत से संबंधित कुछ आधारहीन उत्तर दिये। सुप्रतीक ने उन्हें ग़लत बताया। जब उसने देखा कि कंकण ने मौन रहकर अपनी हार मान ली तो सुप्रतीक ने उस प्रश्न का यों उत्तर दिया।

''पेड़ से मतलब है, मनुष्य। दो टहनियाँ हैं, उसके दो हाथ। गलों से मतलब है उसके नाखून। नाखूनों को काटने पर रक्त तो बहता नहीं, दर्द भी नहीं होता''। कंकण ने पूछा कि तुम्हारा तीसरा प्रश्न क्या है ?

''सुविशाल सौशील्य देश पर सुशील से लेकर हाल ही के रत्नभूपाल तक शासन करते रहे। उस परंपरा में सर्वोत्तम की मृत्यु के पूर्व सौशील्य के राजा कौन थे ?'' यह सुप्रतीक का तीसरा प्रश्न था। ''यह तो बिलकुल ही साधारण प्रश्न है। सर्वोत्तम के पूर्व राजा थे, राजवर्धन।'' कंकण ने कहा।

इसपर सुप्रतीक ज़ोर से हँसता हुआ बोला ''इसको आपने साधारण प्रश्न समझा, इसी कारण अपने ग़लती की। सर्वोत्तम राजा की मृत्यु के पूर्व सर्वोत्तम ही राजा हो सकते हैं, कोई और कैसे राजा हो सकते हैं ?''

कंकण को अपनी ग़लती मालूम हुई। उसने अपनी हार मान ली। सुप्रतीक को दिये गये वचन के अनुसार वह पालकी से उतरा। पालकी में ही घंटे को रखकर राजा को घंटा लौटा दिया। पूरा विषय जानने पर राजा सत्याकर बहुत ही हर्षित हुआ और सुप्रतीक से उसके बारे में विवरण पूछा।

सुप्रतीक ने कहा ''राजन्, मैं विद्वांसों के परिवार का हूँ। किन्तु मेरे माँ-बाप मेरे बचपन में ही गुज़र चुके, इसलिए मुझे चरवाहा बनना पड़ा। मैं अपने देश को और आपको अपनी जान से ज़्यादा चाहता हूँ। इसीलिए मैंने इस प्रतिष्ठा-चिह्न को देश के बाहर जाने से रोकने का भरसक प्रयत्न किया।''

आस्थान की प्रतिष्ठा की रक्षा की सुप्रतीक ने। प्रतिष्ठा-चिन्ह घंटे को सीमाओं के पार जाने नहीं दिया। अत: राजा ने उसका स्वागत-सत्कार किया और अपने आस्थान में ही उसे नौकरी दी।

# मंगला का प्रश्न

तुकाराम अमीर किसान था। उसके घर के बगल में ही में मंगला की झोंपड़ी थी। वह ग़रीब थी। उसने अपनी थोड़ी-सी जो खाली जगह थी, उसमें फूलों के पौधे लगाये। वह उन फूलों को बेचती और अपने पाँच साल के पोते के साथ आराम से ज़िन्दगी गुज़ार रही थी। उसका बेटा और बहू दिवंगत हो चुके थे।

तुकाराम की निरंतर कोशिश रही कि मंगला की जगह हड़प ली जाए और उसे अपनी जगह से मिला ली जाए। उसने एक दिन मंगला को बुलाया और उससे कहा "देखो मंगला, मैं तुम्हारी जगह अपनी जगह से मिला लेना चाहता हूँ। मुझे अपनी जगह दे दो। इसके लिए थोड़ी-बहुत रक़म तुझे दे भी दूँगा।"

मंगला ने साफ़ इनकार कर दिया। उसने तुकाराम से कहा "यह झोंपड़ी ही मेरे और मेरे पोते का एकमात्र सहारा है। इसके सिवा हमारे पास कुछ है नहीं। इसे छोड़कर हम कहाँ जा सकेंगे? कहाँ और वैसे रह पायेंगे? यही हमारा सर्वस्व है। मेरा पति, मेरा बेटा और मेरी बहू सबने इसी झोंपड़ी में आखिरी साँस ली है। मैं भी यहीं मर जाऊँ तो मुझे आत्म-तृप्ति होगी"।

तुकाराम ने देखा कि मीठी बातों से मंगला झुकेगी नहीं तो उसने उसे धमकी दी "कल तक तुम्हें वह झोंपड़ी खाली करनी होगी"।

मंगला कड़कती हुई बोली "मैं क्योंकर उस झोंपड़ी को खाली करूँ? खाली करवाने का आपको क्या अधिकार है?"

जब तुकाराम ने देखा कि मंगला इतनी आसानी से माननेवाली नहीं है तो उसने उसपर ज़बरदस्ती करने की ठानी। उसने अपने नौकरों से झोंपड़ी में से सामान बाहर फेंकवाया और झोंपड़ी को उखाड़ फेंका। उसे अपने अमीर होने का बड़ा घमंड था। उसे विश्वास था कि गाँव का कोई भी आदमी मेरा बाल बांका नहीं कर सकता। किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि मेरी

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

दुश्मनी मोल ले।

मंगला बिलख-बिलखकर रोती रही और उसने अपना दुखड़ा गाँव के प्रमुखों को सुनाया। गाँव के प्रमुखों ने पंचायत बुलवायी और तुकाराम से कारण पूछा।

"इस बूढ़ी का बेटा जब ज़िन्दा था तब उसने मुझसे एक सौ रुपये लिये। ऋण-पत्र भी लिखकर दिया। वह पत्र मेरे पास अब भी सुरक्षित है। इसका पति या इसके बेटे ने कर्ज़ चुकाने की बात तो दूर, ब्याज भी नहीं दिया। मैं भी कब तक चुप बैठा रहूँ। मुझे जो मूलधन और ब्याज मिलना है, उसके लिए मैंने इस झोंपड़ी को अपने अधीन में ले लिया है।" तुकाराम ने बिना किसी हिचकिचाहट के यह झूठ कह दिया और उसने वह पत्र भी दिखाया, जिसपर किसी और की अंगूठी के निशान थे। वह जानता भी था कि पंचायत मेरे विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करेगी।

गाँव के प्रमुखों ने उस ऋण-पत्र का विश्वास करके तुकाराम के पक्ष में ही अपना न्याय-निर्णय सुनाया। मंगला बेचारी क्या कर सकती थी? तुकाराम के ख़िलाफ़ कुछ करने की हालत में वह नहीं भी, असहाय थी।

बड़े ही परिश्रम के बाद मंगला किसी एक और जगह पर झोंपड़ी बना पायी। पहले की ही तरह वहाँ भी फूल बेचती हुई अपनी जिन्दगी गुज़ारने लगी।

कुछ दिन बीत गये। तुकाराम मंगला की पुरानी झोंपड़ी के पास एक नया भवन बनाने के लिए बुनियाद डालने लगा। एक दिन मंगला
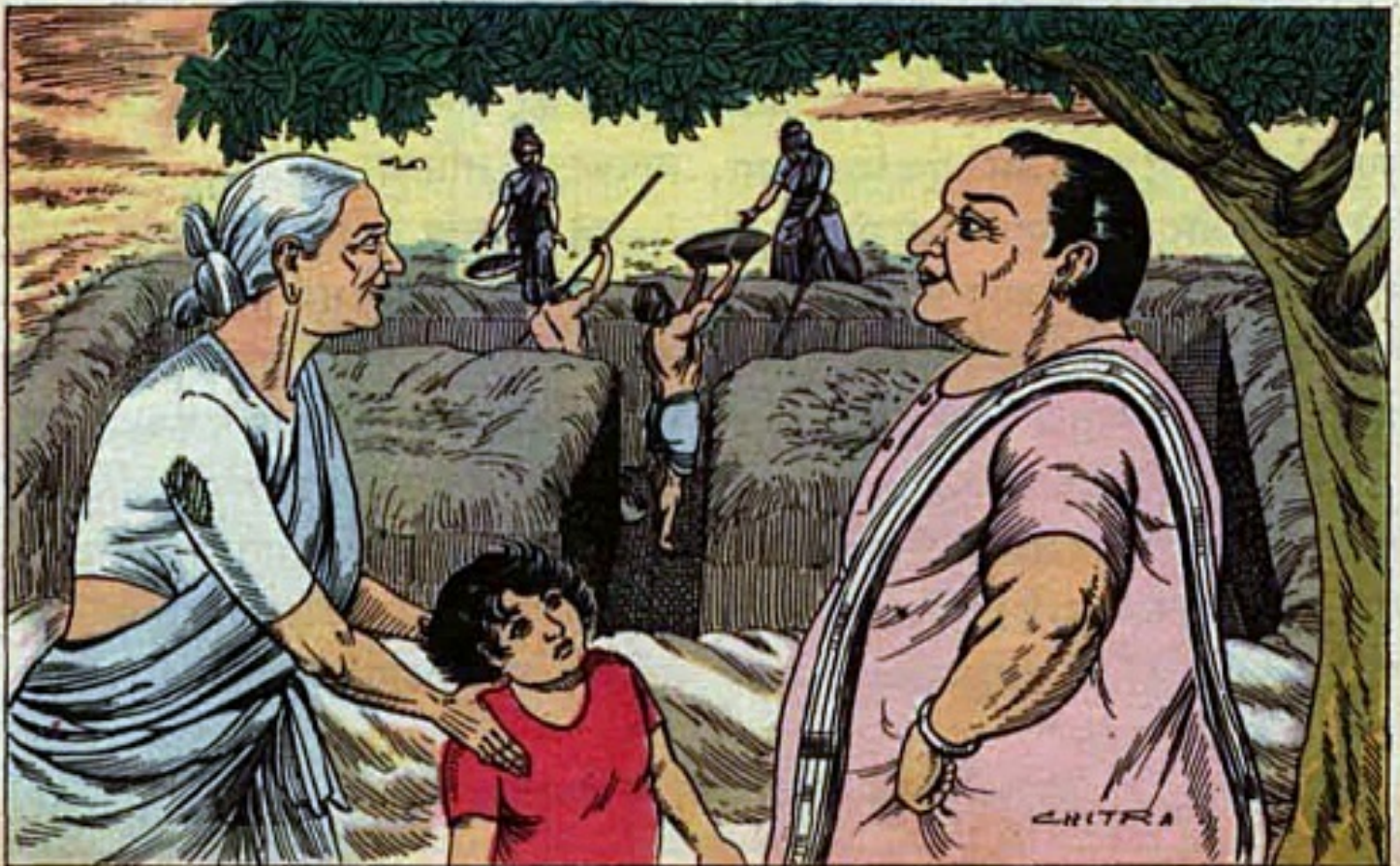
अपने पोते के साथ वहाँ आयी। वहाँ खुदाई का काम चल रहा था। तुकाराम की निगरानी में काम ज़ोर-शोर से चल रहा था।

तुकाराम ने व्यंग्य-भरे स्वर में उससे पूछा "यहाँ क्यों आयी हो? यह जगह तो अब मेरी है। अच्छा यही होगा कि फ़ौरन यहाँ से निकल जाओं।"

"आप तो अमीर है और मैं हूँ गरीब। फूल बेचकर अपना पेट भर रही हूँ। मुझ पर थोड़ी सी दया दिखाइये। मेरी एक छोटी-सी सहायता कीजिये" मंगला ने कहा।

"बोलो, कैसी सहायता?" तुकाराम ने पूछा।

मंगला ने कहा "मेरा पोता रोज़ ज़िद कर रहा है कि मैं उसे पुरानी जगह दिखाऊँ"।

"दिखा दिया ना, अब जाओ" तुकाराम ने कहा।

"ज़रूर चली जाऊँगी। बस, मुझे एक टोकरी भर की मेरी झोंपडी की मिट्टी दिलाइये। उस मिट्टी से चूल्हा बनाऊँगी और रसोई पकाऊँगी।"

तुकाराम उस मंगला की इच्छा को सुनते ही ज़ोर से हँस पडा और कहा "अच्छा, ले जाओ"।

मंगला ने पुरानी झोपड़ी की मिट्टी से टोकरी भर दी और तुकाराम से कहा "दया करके इस टोकरी को अपने हाथों उठाइये और मेरे सिर पर रख दीजियेगा। बडा पुण्य होगा"।

तुकाराम टोकरी उठाने की कोशिश करने लगा। लेकिन भारी टोकरी वह उठा नहीं पाया। बहुत बार उसने कोशिश की। लेकिन असफल ही रहा। पसीने से वह सराबोर हो रहा था, पर उससे टोकरी उठायी नहीं जा रही थी।

मंगला ने ज़ोर से हँसते हुए प्रश्न किया "आप तो टोकरी भर की मिट्टी भी ढो नही पाते, तो इतनी मिट्टी कैसे ढो पायेंगे?"

भावगर्भित इन बातों को सुनकर तुकाराम शरमा गया। साथ ही उसमें ज्ञानोदय भी हुआ। अपने किये पर उसे पछतावा हुआ। उसने वहीं बूढ़ी मंगला के लिए एक घर बनवाया और उसे दे दिया।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text books. Time for games. Time to meet old friends. And make new ones. Time to start studying again. Because there's so much to learn about the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a great year in school. And remember to tell us what you've learnt everyday, when you come home from school !
THE
HANDAMAMA
OLLECTION
ARTIG1246

# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

**पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, जुलाई, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।**

Taji Prasad

Taji Prasad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० मई, '९५ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

**चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

---

## मार्च, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **छोड़ो कल्पना का महल**

दूसरा फोटो : **खोजो समस्या का हल**

प्रेषक : **श्री अरविंद कुमार,**

**C-51 सचिवालय कालनी, महानगर, लखनऊ, २२६ ००६ उत्तर प्रदेश**




**Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.**

जवाब

१. फूलों की पंखुड़ियां ज्यादा है
२. तोते की चोंच खुली है
३. तोते की गर्दन पर लाल पट्टी है
४. लड़की की आंखे खुली है
५. लड़की मुस्कुरा रही है
६. फ्रॉक पर सितारे बने है
७. लड़की के कंगन पर हीरे जड़े है
८. कुत्ते की जीभ बाहर है
९. प्लेट पर पारले का नाम लिखा है
१०. प्लेट में मैंगोबाइट रखी है